प्रकाशन का 46 वां वर्ष

सरोकारी पत्रकारिता के लिए समर्पित

शैल

निष्पक्ष एवं निर्भीक

साप्ताहिक समाचार

ई-पेपर

प्रदेश का पहला ऑनलाईन साप्ताहिक

www.facebook.com/shailsamachar

वर्ष 46 अंक-42 पंजीकरण आरएनआई 26040/74 डाक पंजीकरण एच. पी./93/एस एम एल Valid upto 31-12-2023 सोमवार 25-8 नवम्बर 2021 मूल्य पांच रुपए

क्या जयराम हटेंगे- महंगाई को हार का कारण बनाकर केंद्र के सिर ठीकरा फोड़ने से उठी चर्चा

चारों सीटें हारने से शैल के आकलन पर लगी जनता की मोहर

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने उपचुनाव में मिली हार के लिये महंगाई को जिम्मेदार ठहरा कर गेंद केंद्र के पाले में डाल दी है। जयराम के ब्यान के बाद केंद्र के निर्देशों पर भाजपा शासित राज्यों में राज्य सरकारों द्वारा पेट्रोल-डीजल पर लगाये अपने करों में कटौती करके उपभोक्तओं को कुछ राहत भी प्रदान की है। इससे यह प्रमाणित हो जाता है की जनता में पेट्रोल-डीजल की कीमतें बढ़ने से भारी आक्रोश है। यह आक्रोश इस हार के रूप में सामने आया और इसके परिणाम स्वरूप कीमतों में कमी आ गयी। बल्कि अब जनता में यह चर्चा चल पड़ी है कि यदि इतनी सी हार से कीमतों में इतनी कटौती हो सकती है तो इसमें और कमी का प्रयोग किया जाना चाहिये। यह सही है कि जयराम के ब्यान के बाद ही यह सब कुछ घटा है। लेकिन क्या जयराम इसी से अपनी जिम्मेदारी से भाग सकते हैं? क्या राज्य सरकारों को उपचुनाव से पहले यह समझ ही नही आया कि महंगाई बर्दाश्त से बाहर हो रही है? उप चुनाव की घोषणा के साथ ही खाद्य तेलों की कीमतें बढ़ाकर क्या जयराम सरकार ने जनता के विवेक को चुनौती नहीं दी? प्रदेश की जनता ने चार नगर निगमों में से तीन में भाजपा को हराकर सुधरने की चुनौती दी थी और सरकार ने इस चुनौती का जवाब धर्मशाला नगर निगम में तोड़फोड़ करके दिया। तोड़-फोड़ की राजनीति को सफलता मान लिया गया। लेकिन जमीन पर काम नही कर पायी। हर काम केवल घोषणा तक सीमित होकर रह गया। जैसा कि केंद्र द्वारा घोषित 69 फोरलेन सड़कों की हकीकत आज भी सैद्धांतिक संस्कृति से आगे नही सरक पायी है। युवाओं के लिये जब भी किसी विभाग में कोई नौकरियों की घोषणाएं की गई और प्रक्रिया शुरू की गयी तो ऐसी घोषणाएं भी एक ही बारी में अमली शक्ल नही ले पायी है। अधिकांश ऐसी घोषणाओं में कभी अदालत तो कभी किसी और कारण से व्यवधान आते ही रहे हैं। केंद्र की तर्ज पर राज्य सरकार भी घोषणाओं की सरकार बनकर रह गयी है। इन्हीं घोषणाओं के सिर पर सर्वश्रेष्ठता के कई पदक भी हासिल कर लिये हैं। इन्हीं कोरी घोषणाओं का परिणाम है कि आज 20 विधानसभा क्षेत्रों में मतदान हुआ और हर एक में नोटा का प्रयोग हुआ। उपचुनावों में नोटा का प्रयोग होना सीधे सरकार से अप्रसन्नता का प्रमाण होता है। आने वाले विधानसभा चुनाव में यदि 68 विधानसभा क्षेत्रों में ही नोटा का प्रयोग हुआ तो परिणाम क्या हो सकते हैं इसका अंदाजा लगाना कठिन नहीं होगा।

2014 की लोकसभा 2017 की विधानसभा और 2019 के लोकसभा के चुनाव सभी केंद्र की सरकार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम पर लड़े और जीते गये हैं। इन सभी चुनाव में वीरभद्र और उनके परिजनों के खिलाफ बने आयकर ईडी और सीबीआई के मामलों को खूब उछाला गया। इस बार यह पहला उपचुनाव है जो राज्य सरकार के कामकाज और मुख्यमंत्री के चेहरे पर लड़ा गया। इस उपचुनाव में कांग्रेस के किसी नेता के खिलाफ कोई मामला मुद्दा नहीं बन पाया। बल्कि भाजपा के हर छोटे-बड़े नेता ने कांग्रेस को नेता वहीन संगठन करार दिया। कोविड में कांग्रेस द्वारा बारह करोड़ के खरीद बिल अपनी हाईकमान को भेजने के मामले को मुख्यमंत्री ने इन चुनावों में भी उछालने का प्रयास किया और जनता ने इसे हवा-हवाई मानकर नजरअंदाज कर दिया। ऐसे में यदि भाजपा की भाषा में नेता वहीन कांग्रेस ने जयराम सरकार को चार-शून्य पर उपचुनावों में ही पहुंचा दिया तो आम चुनाव में क्या 68-शून्य हो जाना किसी को हैरान कर पायेगा। इन उपचुनावों की पूरी जिम्मेदारी मुख्यमंत्री और उनकी टीम पर थी। इस उपचुनाव में महंगाई और बेरोजगारी ही केंद्रीय मुद्दे रहे हैं। जो सरकार मंत्रिमंडल की हर बैठक में नौकरियों का पिटारा खोलती रही और मीडिया इसको बिना कोई सवाल पूछे प्रचारित करता रहा है उसका सच भी इन परिणामों से सामने आ जाता है। यह परिणाम मुख्यमंत्री और उनकी टीम के अतिरिक्त भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा पर भी सवाल खड़े करते हैं क्योंकि वह हिमाचल से ताल्लुक रखते हैं और दो बार प्रदेश में मंत्री भी रहे हैं।

इससे हटकर यदि शुद्ध व्यवहारिक राजनीति के आईने से आकलन करें तो पहला सवाल ये उठता है कि इस उपचुनाव में पूर्व मुख्यमंत्री शांता कुमार और प्रेम कुमार धूमल दोनों स्टार प्रचारकों की सूची में थे। लेकिन प्रेम

शेष पृष्ठ 8 पर........

भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में चर्चा तक नहीं हुई हिमाचल और राजस्थान पर

शिमला/शैल। भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक पर प्रदेश के हर राजनेता की निगाहें लगी हुई थी। माना जा रहा था कि प्रदेश में हुए उप चुनावों के बाद हो रही इस बैठक में मुख्यमंत्री और अन्य नेताओं के साथ चुनाव परिणामों को लेकर चर्चा होगी। परंतु बैठक में हिमाचल और राजस्थान का नाम तक नहीं लिया गया। हाईकमान द्वारा प्रदेश का जिक्र तक ना किये जाने से नेता लोग परेशान हो गये हैं। जो लोग संघ भाजपा की कार्यशैली से परिचित हैं वह जानते हैं कि ऐसे मामलों में संबंधित राज्य के नेताओं से विचार विमर्श की कोई बड़ी प्रथा नहीं है। राज्य के बारे में सारा फीडबैक संघ के माध्यम से लिया जाता है। संघ के निर्देशों पर ही नेतृत्व को लेकर फैसले किये जाते हैं। हिमाचल में नेतृत्व परिवर्तन की चर्चाएं लंबे समय से चली आ रही हैं। लेकिन शायद नड्डा का गृह राज्य होने के कारण यह सवाल टलता रहा। अब जब सरकार चारों उपचुनाव हार गई है तब इससे बड़ा परिणाम और कुछ हो नहीं सकता है। वर्तमान नेतृत्व से सत्ता में वापसी करने की उम्मीद करना अपने को ही अंधेरे में रखना होगा। बल्कि सम्मानजनक हार की उम्मीद भी अपने को झुठलाना होगा। क्योंकि मुख्यमंत्री जिन सलाहकारों में घिर गये हैं उनके कब्जे से बाहर निकलना उनके बस में नहीं रह गया है।

ऐसी वस्तुस्थिति में हाईकमान के पास भी कोई ज्यादा विकल्प नहीं है। लोकसभा में प्रदेश की कुल चार सीटें जिनको केंद्र की सरकार बनने -बनाने में कोई बड़ा योगदान नहीं माना जाता। इसलिये प्रदेश को उसी के हाल पर भी छोड़ा जा सकता है। यदि केंद्र में सरकार बनाने में एक -एक सीट का भी योगदान होने के सिद्धांत को माना जाये तो हाईकमान को प्रदेश को लेकर कोई फैसला अभी लेना आवश्यक हो जायेगा। क्योंकि हिमाचल की यह हार राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का केंद्र बन चुकी है। क्योंकि कुछ न्यूज़ साईट्स ने जयराम ठाकुर के महंगाई के ब्यान को केंद्र के खिलाफ बगावत तक करार दे दिया है। वैसे इस बैठक में हिमाचल का नाम तक ना लिये जाने को कुछ विश्लेषक यह मान रहे हैं कि नेतृत्व को लेकर फैसला लिया जा चुका है और इसी माह में घोषित हो जायेगा। क्योंकि हाईकमान के सामने कांग्रेस द्वारा यूपी चुनाव में 40: टिकट महिलाओं को देने की घोषणा ने भी कुछ गंभीर सवाल खड़े कर दिये हैं। भाजपा के पास इस समय किसी भी राज्य में कोई महिला मुख्यमंत्री नहीं है।

जीवन में उच्च लक्ष्यों से सफलता हासिल होती है: राज्यपाल

शिमला/शैल। राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने कहा कि जीवन में किसी प्रकार की उपलब्धि हासिल करने के लिए उच्च लक्ष्य का होना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जो विद्यार्थी अपने जीवन में उच्च लक्ष्य निर्धारित कर उन्हें प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करते हैं उन्हें अवश्य सफलता प्राप्त होती है।

यह बात राज्यपाल ने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला के सौजन्य से संकल्प फाउंडेशन के तत्वावधान में

आयोजित चयनित प्रतिभागी अभिनंदन समारोह-2021 के अवसर पर कही।

उन्होंने संकल्प के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि यह संस्थान गत 37 वर्षों से कार्य कर रहा है और इस संस्थान से लगभग 7.5 हजार विद्यार्थियों ने कोचिंग ली है। यह आवश्यक नहीं है कि हर व्यक्ति जीवन में सफल हो परन्तु उनमें अवश्य ही नैतिक मूल्यों का विकास होता है। उन्होंने कहा कि जिनके पास यह प्रमाण-पत्र है वे समाज के प्रति बेहतर कार्य करने में सक्षम है। इस प्रकार के व्यक्तियों का समाज में महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है।

राज्यपाल ने कहा कि हम समाज में अच्छी गतिविधियों के लिए व्यक्ति या समूह को श्रेय प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश पूर्ण राज्यत्व का स्वर्ण जयंती वर्ष मना रहा है। प्रदेश के विकास में विभिन्न मुख्यमंत्रियों के नेतृत्व और प्रशासनिक अधिकारियों के अलावा सड़क पर कार्य करने वाले मजदूर ने भी अपना योगदान दिया है जिसकी अनदेखी नहीं की जा सकती है।

अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवाएं परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को बधाई देते हुए राज्यपाल ने कहा कि वे अन्य विद्यार्थियों के लिए भी आदर्श हैं। उन्होंने कहा कि आज प्रशासनिक सेवाओं के अधिकारियों के समक्ष कई चुनौतियां हैं परन्तु वह किस प्रकार इन चुनौतियों का समाधान ढूंढेंगे यह अधिक महत्त्वपूर्ण है। आम लोगों की समस्याओं का समाधान करने के लिए समर्पण और सेवा भाव का होना बहुत आवश्यक है जिसके लिए उन्हें समाज सेवक के रूप में कार्य करने की आवश्यकता है।

संकल्प के संस्थापक सदस्य और विशिष्ट अतिथि संतोष तनेजा ने राज्यपाल का स्वागत किया और संस्थान द्वारा विद्यार्थियों को प्रदान की जा रही सेवाओं और गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आईएएस परीक्षा की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों को दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास के साथ कठिन प्रयास करने चाहिए।

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सिकन्दर कुमार और यूजीसी के सदस्य डॉ. नागेश ठाकुर भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

पूर्व आईएएस सुरेन्द्र घनकरोकटा ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

राज्यपाल व मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों को दीपावली की शुभकामनाएं दीं

शिमला/शैल। राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर और मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने प्रदेश के लोगों को दीपावली के पावन अवसर पर शुभकामनाएं दी हैं।

राज्यपाल ने अपने संदेश में कहा कि प्रकाश का यह पर्व खुशी एवं प्रसन्नता तथा बुराई पर अच्छाई और अंधकार पर उजाले की विजय का प्रतीक है। उन्होंने आशा जताई है कि दीपावली का त्यौहार प्रदेशवासियों के जीवन में खुशहाली और समृद्धि लेकर आयेगा।

मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने प्रदेशवासियों को दीपावली पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि दीपावली का पर्व प्रदेशवासियों के जीवन में ज्ञान का प्रकाश फैलायएगा और आपसी स्नेह और भाईचारे की भावना को सुदृढ़ करेगा। उन्होंने कहा कि दीपावली देश के प्रमुख त्यौहारों में एक है और सभी क्षेत्रों एवं धर्मों के लोग इसे मनाते हैं।

उन्होंने प्रदेशवासियों से कोविड सम्बन्धी दिशा-निर्देशों का पालन कर पारम्परिक रूप से सुरक्षित दीपावली मनाने का आग्रह किया है।

मुख्यमंत्री ने प्रदेश के लोगों के साथ दीपावली मनाई

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने प्रदेश के लोगों के साथ अपने सरकारी निवास ओक ओवर में हर्षोल्लास के साथ दीपावली का त्यौहार मनाया।

राजनीतिक नेताओं, वरिष्ठ अधिकारियों, पुलिस अधिकारियों तथा विभिन्न वर्गों के लोगों ने इस अवसर पर मुख्यमंत्री को दीपावली की बधाई एवं शुभकामनाएं दी। मुख्यमंत्री ने भी लोगों को दीपावली की शुभकामनाएं दी और समृद्ध नव वर्ष की कामना की।

मुख्यमंत्री ने राज्यपाल को दी दीपावली की शुभकामनाएं

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने अपनी धर्मपत्नी डॉ. साधना ठाकुर के साथ राजभवन शिमला में राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर के साथ भेंट कर उन्हें दीपावली की शुभकामनाएं दी।

इस अवसर पर नगर निगम शिमला की महापौर सत्या कौंडल, पार्षदों, कुलपतियों, राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी राज्यपाल से भेंट कर उन्हें दीपावली की शुभकामनाएं दीं।

राज्यपाल ने ग्रेट वॉल ऑफ शिमला का लोकार्पण किया

शिमला/शैल। राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने वेस्ट टू वेल्थ इनिशिएटिव के अन्तर्गत ऑर्किड

शिमला द्वारा बनाई गई कलाकृति ग्रेट वॉल ऑफ शिमला का लोकार्पण किया।

इस अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि आर्किड शिमला ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक नई शुरुआत की है और ग्रेट वॉल ऑफ शिमला के माध्यम से व्यर्थ सामग्री का कलात्मक तरीके से उपयोग करके पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया है। उन्होंने कहा कि आज विश्व पर्यावरण में संरक्षण को महत्व दिया जा रहा है, जबकि भारत की परम्पराओं में पर्यावरण को धर्म से सम्बद्ध किया गया है।

राज्यपाल ने कहा कि हमारे त्योहारों का आयोजन भी पर्यावरण को ध्यान में रखकर किया जाता है। भारतीय संस्कृति में वृक्षों की पूजा की जाती है। उन्होंने कहा कि आज पूरा विश्व हमारे विचारों, परम्पराओं और संस्कृति को अपना रहा है, इसलिए हमें अपनी समृद्ध संस्कृति का संरक्षण करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि इस तरह की पर्यावरण अनुकूल परियोजनाओं से लोगों की मानसिकता बदलेगी और हिमाचल देश का पहला राज्य होगा, जहां लोग पर्यावरण संरक्षण के बारे में अधिक जागरूक होंगे। उन्होंने कहा कि पर्यावरण, पर्यटन और विकास एक दूसरे के पूरक हैं। उन्होंने ऑर्किड शिमला के प्रयासों की भी सराहना की।

इस अवसर पर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डा. विट्ठल वेंकटेश कमंत ने राज्यपाल का स्वागत किया और कहा कि हमारा दृष्टिकोण हरित जीवन को प्रोत्साहित करना है। उन्होंने कहा कि कचरे को सम्पदा में परिवर्तित करने की परिकल्पना ने आर्किड टीम के प्रत्येक सदस्य को लीक से हटकर सोचने और आने वाली पीढ़ी को पृथ्वी के प्रति सम्मानजनक होने के लिए प्रेरित करेंगे।

लेडी गवर्नर अनघा आर्लेकर और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

ग्रेट वॉल ऑफ शिमला लगभग 5 लाख अपशिष्ट बोतलों के ढक्कन और कार्बन मुक्त रिसाइकलड प्लास्टिक का उपयोग करके लगभग 275 फुट लंबा और 15 फुट ऊंचा का सबसे बड़ा भित्ति चित्र बनाया गया है। इस भित्ति चित्र को स्कूली बच्चों, वरिष्ठ नागरिकों और शिमला वासियों द्वारा बनाया गया है।

राज्यपाल ने सरदार पटेल की जयंती पर रन फॉर यूनिटी को हरी झण्डी दिखाकर किया रवाना

शिमला/शैल। राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती पर आयोजित राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर शिमला के ऐतिहासिक रिज मैदान से रन फॉर यूनिटी को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया।

ऐतिहासिक रिज मैदान से आरम्भ की गई रन फॉर यूनिटी दौड़ में भारी संख्या में लोगों ने भाग लिया जिसमें खिलाड़ी, खेल प्रेमी, पुलिस बल के कर्मी, विद्यार्थी तथा अन्य शामिल थे। हिमाचल प्रदेश स्टेट रेडक्रॉस सोसायटी तथा जिला शिमला प्रशासन द्वारा आयोजित इस दौड़ का समापन द मॉल तथा छोटा शिमला से होते हुए पुनः रिज मैदान पर हुआ।

राज्यपाल के सचिव प्रियतु मण्डल, उपायुक्त शिमला आदित्य नेगी और पुलिस अधीक्षक डॉ. मोनिका भुटुंगरू भी इस अवसर पर उपस्थित थीं।

मुख्यमंत्री ने मलाणा गांव में आग लगने की घटना पर शोक व्यक्त किया

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने कुल्लू जिला के मलाणा गांव में आग लगने की घटना पर शोक व्यक्त किया है। आग लगने की इस घटना में 16 घर जल गए हैं, जिससे लगभग 150 लोग प्रभावित हुए हैं।

मुख्यमंत्री ने जिला प्रशासन को घटना स्थल का दौरा कर प्रभावित परिवारों को तुरन्त राहत और पुनर्वास उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए।

उपायुक्त कुल्लू आशुतोष गर्ग ने अन्य अधिकारियों के साथ घटना स्थल का दौरा कर राहत कार्यों का जायजा लिया।

शैल समाचार
संपादक मण्डल

संपादक- बलदेव शर्मा

सयुक्त संपादक:जे.पी.भारद्वाज

विधि सलाहकार: ऋचा

अन्य सहयोगी

राजेश ठाकुर

सुदर्शन अवस्थी

मुख्यमंत्री ने कांगड़ा शक्तिपीठों से आरती दर्शन के सीधे प्रसारण का किया शुभारम्भ

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने कांगड़ा जिला के तीन शक्तिपीठों श्री ज्वालाजी, श्री ब्रजेश्वरी से आरतियों के प्रतिदिन सीधो प्रसारण से श्रद्धालुओं और भक्तों को घर बैठे पूजा और आरती के माध्यम से माता के दर्शन

और श्री चामुण्डा जी से आरती के सीधा प्रसारण का शुभारम्भ किया। इससे पूर्व उन्होंने मन्दिर में शीश नवाया और पूजा अर्चना की। उन्होंने ज्वालाजी न्यास परिसर में स्थापित संत आदिगुरू शंकराचार्य की प्रतिमा के दर्शन भी किए।

जय राम ठाकुर ने आशा व्यक्त की कि जिला कांगड़ा के तीन शक्तिपीठों करने और शीश नवाने की सुविधा उपलब्ध होगी। इससे पूर्व उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के श्री केदारनाथ धाम में आयोजित कार्यक्रम में ऑनलाईन भाग लिया।

कांगड़ा के उपायुक्त डा. निपुण जिन्दल ने इन शक्तिपीठों से आरती दर्शन के सीधे प्रसारण के बारे जानकारी देते हुए कहा कि श्री ज्वालामुखी मन्दिर की आरती प्रतिदिन शीतकाल में सांय 8.30 से 9 बजे जबकि ग्रीष्मकाल में 9. 30 बजे से 10 बजे, ब्रजेश्वरी मन्दिर की आरती शीतकाल में प्रात: 6 बजे से 7 बजे तक, ग्रीष्मकाल में प्रात: 5 बजे से 6 बजे तथा शीतकाल और ग्रीष्मकाल में रात्रि 7 से 8 बजे प्रसारित की जाएगी।

इसी प्रकार श्री चामुण्डा मन्दिर से आरती दर्शन का सीधा प्रसारण शीतकाल और ग्रीष्मकाल में प्रतिदिन प्रात: 8 से 8.30 बजे और शीतकाल में सांय 6.30 बजे से 7 बजे और ग्रीष्मकाल में सांय 8 बजे से 8.30 बजे तक होगा। इन आरतियों का प्रसारण एम.एच.1 चैनल द्वारा किया जाएगा।

केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर, उद्योग मंत्री बिक्रम सिंह, सांसद किशन कपूर, राज्य योजना बोर्ड के उपाध्यक्ष रमेश चन्द धवाला, विधायक अर्जुन ठाकुर और राजेश ठाकुर स्थानीय नेता एवं वरिष्ठ अधिकारियों ने ज्वालामुखी मन्दिर परिसर से प्रधानमंत्री के श्री केदारनाथ धाम के ऑनलाईन कार्यक्रम में भाग लिया।

मुख्यमंत्री ने कोरोना के विरूद्ध संकल्प को दोहराया

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने कांगड़ा के टण्डन क्लब में स्वास्थ्य विभाग द्वारा स्थापित टीकाकरण केन्द्र का दौरा कर कोरोना योद्धाओं का हौसला बढ़ाया। यह टीकाकरण केन्द्र जिला में टीकाकरण अभियान आरम्भ होने के समय से ही कार्य कर रहा है। इस केन्द्र ने 37 हजार से अधिक लोगों का टीकाकरण कर जिला कांगड़ा में वैक्सीन की अधिकतम खुराक देने की उपलब्धि हासिल की है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जिला कांगड़ा में अब तक 19.39 लाख खुराकें लगाई गई हैं। उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि वे कोरोना के विरूद्ध लड़ाई में ढील न बरतें और इस घातक संक्रमण के विरूद्ध एकजुट होकर सभी निर्धारित मापदण्डों का पालन करें। उन्होंने कहा कि सभी लोगों को सामाजिक दूरी अपनाने और सार्वजनिक स्थलों में भीड़ भाड़ से बचने जैसे साधारण नियमों का पालन करना चाहिए तथा बाहर जाते समय मास्क का प्रयोग करना और स्वच्छता को विशेष प्राथमिकता देनी चाहिए।

जय राम ठाकुर ने आशा व्यक्त की कि नवम्बर माह के अन्त तक प्रदेश में शत-प्रतिशत टीकाकरण के लक्ष्य को हासिल कर लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि राज्य ने कोरोना टीकाकरण की पहली डोज में देश में प्रथम स्थान हासिल किया है और प्रदेश दूसरी डोज में भी इस स्थान को कायम रखेगा। उन्होंने कहा कि बड़ा भंगाल और मलाणा जैसे कठिन भौगोलिक क्षेत्रों के निवासियों ने हवाई मार्ग द्वारा पहुँचाई गई खुराक और अपनी देवी-दवताओं की अनुमति से वैक्सीनेशन के लक्ष्य को सफलतापूर्वक हासिल किया है। उन्होंने कहा कि कोरोना के इस कठिन दौर में भी राज्य के विकास और कल्याण के कार्यो में किसी प्रकार की बाधा नहीं आई है।

इसके पश्चात मुख्यमंत्री कांगड़ा स्थित पूर्व मंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जी.एस.बाली, जिनका हाल ही में निधन हुआ है, के आवास पर गए और उनके परिजनों के प्रति गहरी संवेदनाएं व्यक्त कीं। प्रदेश के लिए श्री बाली की सेवाओं को याद करते हुए उन्होंने कहा कि उनका एक गतिशील व्यक्तित्व था और वे प्रमुख समाज सेवी थे, जिन्होंने न केवल अपने विधानसभा क्षेत्र बल्कि प्रदेश के लोगों के कल्याण के लिए कार्य किया।

मुख्यमंत्री ने जिला कांगड़ा के निकट सोहारा स्थित विधायक पवन काजल के घर जाकर उनकी माता के निधन पर शोक व्यक्त किया तथा दिवंगत आत्मा की शांति की प्रार्थना भी की।

उद्योग मंत्री बिक्रम सिंह, विधायक अरूण मेहरा, राज्य वित्त आयोग के अधयक्ष सतपाल सिंह सत्ती, स्थानीय नेता, कांगड़ा के उपायुक्त तथा पुलिस अधीक्षक भी मुख्यमंत्री के साथ थे।

हिमाचल प्रदेश की सभी 68 विधानसभा सीटों पर 2022 में चुनाव लड़ेगी बसपा:राजा राम

शिमला/शैल। बहुजन समाज पार्टी की महत्वपूर्ण प्रदेश स्तरीय बैठक 30 अक्तूबर को बसपा प्रदेश कार्यालय ऊना हिमाचल प्रदेश मे हुई। जिसमें मुख्य अतिथि राजाराम पूर्व राज्य सांसद व प्रभारी बसपा हिमाचल प्रदेश का बसपा कार्यकर्ताओं ने जोरदार स्वागत किया।

उनके साथ विशिष्ट अतिथि दयाचंद, प्रभारी हिमाचल प्रदेश, सुमरत सिंह, प्रभारी हिमाचल प्रदेश, काशीराम प्रभारी हिमाचल प्रदेश विशेष रूप से उपस्थित रहें।

प्रदेश स्तरीय बैठक में राजा राम ने बताया कि 2022 में बसपा हिमाचल प्रदेश की सभी विधानसभा सीटों पर मजबूती से चुनाव लड़ेगी। प्रत्येक विधानसभा से टिकाऊ और मजबूत नेताओं को तैयार करने के लिए हिमाचल प्रदेश में एक लाख नए कार्यकर्ताओं को जोड़ने का लक्ष्य रखा है। जिसके लिए बहुजन समाज पार्टी का सदस्यता अभियान 1 नवंबर से प्रदेश के सभी विधानसभा में शुरू किया जाएगा।

प्रेम कुमार हवाल, प्रदेश सचिव ने बताया हिमाचल प्रदेश की सभी विधानसभा से आये हुये बसपा नेताओं से जमीनी

फीडबैक भी लिया गया। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश की सभी सरकारों ने गरीबों, किसानों, बागबानों और वंचित तबकों का उत्पीड़न ही किया है। हिमाचल प्रदेश की जनता परिवर्तन चाहती है, जिसके लिए बहुजन समाज पार्टी एक बेहतरीन विकल्प बनकर उभर रही है। जिसके लिए कार्यकर्ता गांव-गांव जाकर आम जनता को समय-समय पर पार्टी की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी मुहैया कराने का अभियान चला रहे है।

नारायण आजाद, प्रदेश अध्यक्ष बसपा हिमाचल प्रदेश ने बैठक की अध्यक्षता करते हुए बताया कि मंडी लोकसभा क्षेत्र में होने वाले प्रदेश स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन की रूपरेखा को भी तय कर दिया है। जिसकी जानकारी कार्यकर्ताओं को नवंबर महीने के पहले हफ्ते में सांझा की जाएगी।

प्रदेश में हुए उप-चुनावों के परिणाम घोषित

शिमला/शैल। प्रदेश की एक लोकसभा सीट और तीन विधानसभा क्षेत्रों के लिए हुए उप-चुनावों के परिणाम घोषित हो गये।

मंडी संसदीय क्षेत्र के लिए हुए उप-चुनावों में कांग्रेस प्रत्याशी प्रतिभा सिंह विजयी रहीं जिन्हें 3,69,565 मत प्राप्त हुए। भाजपा के उम्मीदवार ब्रिगेडियर खुशहाल चंद ठाकुर को 3,62,075 मत, राष्ट्रीय लोकनीति पार्टी की अम्बिका श्याम को 3617, हिमाचल जनक्रांति पार्टी के मुंशी राम ठाकुर को 1262 जबकि निर्दलीय प्रत्याशी अनिल कुमार को 1119 और सुभाष मोहन स्नेही को 1772 मत प्राप्त हुए।

फतेहपुर विधानसभा क्षेत्र के उप-चुनाव में कांग्रेस पार्टी के भवानी सिंह पठानिया ने जीत हासिल की। उन्हें 24,449 मत प्राप्त हुए जबकि भाजपा प्रत्याशी बलदेव ठाकुर को 18,660, हिमाचल जनक्रांति पार्टी के पंकज कुमार दर्शी को 375 तथा निर्दलीय प्रत्याशी डा. अशोक कुमार सोमल को 295 और डा. राजन सुशान्त को 12,927 वोट हासिल हुए।

जुब्बल-कोटखाई विधानसभा क्षेत्र के उप-चुनाव में कांग्रेस पार्टी के रोहित ठाकुर ने सर्वाधिक 29,955 मत प्राप्त कर विजय हासिल की। भाजपा की नीलम सरैक को 2644, निर्दलीय प्रत्याशी चेतन सिंह बरागटा को 23,662 और सुमन कदम को 170 मत प्राप्त हुए।

अर्की विधानसभा क्षेत्र के लिए हुए उप-चुनाव में कांग्रेस पार्टी के संजय अवस्थी ने विजय प्राप्त की जिन्हें 30790 वोट मिले भाजपा के रतन सिंह पाल को 27570 जबकि निर्दलीय जीत राम को 547 मत प्राप्त हुए।

विनम्रतापूर्वक स्वीकार करता हूं उप-चुनावों के नतीजों को:मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने कहा कि वह प्रदेश की एक लोकसभा सीट और तीन विधानसभा क्षेत्रों के लिए हुए उप-चुनावों के नतीजों को विनम्रतापूर्वक स्वीकार करते हैं।

उन्होंने कहा कि चुनाव परिणाम हमारी अपेक्षा के अनुरूप नहीं रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी बहुत कम अन्तर से मण्डी संसदीय क्षेत्र का उप-चुनाव हारी है। जय राम ठाकुर ने कहा कि हम प्रदेश के लोगों की आकांक्षाओं पर खरा उतरने के लिए भरसक प्रयास करेंगे तथा नई ऊर्जा व समर्पण के साथ कार्य करते हुए 2022 के विधानसभा चुनावों में बेहतर प्रदर्शन करेंगे।

मुख्यमंत्री ने इन उप-चुनावों के सभी विजेता प्रत्याशियों को बधाई दी है।

भाजपा उपचुनावों के नतीजों की करेगी समीक्षा:कश्यप

शिमला/शैल। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद सुरेश कश्यप ने कहा कि हम इन उपचुनावों में जन मत को स्वीकार करते है और सभी

चारों जीते हुए प्रत्याशियों को शुभकामनाएं देते है।

उन्होंने कहा की इन चुनावों में परिणाम हमारी अपेक्षा के अनुरूप नहीं रहे, भाजपा अपने स्तर पर इन चुनावों की समीक्षा एवं आत्ममंथन करेगी। समीक्षा के दौरान जो भी कमियां सामने आएगी उनको सुधारा जाएगा।

भाजपा 2022 में जीत हासिल करने के लिए सभी कमियों को सुधारकर हम आगे बढ़ेगे।

कश्यप ने कहा कि मंडी संसदीय क्षेत्र के इतिहास में पहली बार इतने कम अंतर से कांग्रेस को जीत हासिल हुई है। संसदीय क्षेत्र में कई स्थानों पर अप्रत्याशित नतीजे सामने आए है।

सभी विधानसभा क्षेत्रों की क्षेत्रवार समीक्षा की जाएगी।

उन्होंने कहा की आने वाले समय मे संगठन व पार्टी स्तर पर किस प्रकार से आगे बढ़ना है उसकी समीक्षा कर विस्तृत रूपरेखा तैयार की जाएगी।

कांग्रेस की जीत पर सेवादल ने दी बधाई

शिमला/शैल। हिमाचल प्रदेश कांग्रेस सेवादल ने प्रदेश में समाप्त हुए लोकसभा व विधानसभा उपचुनाव में कांग्रेस प्रत्याशियों की जीत पर बधाई दी। कांग्रेस सेवादल प्रदेश अध्यक्ष अनुराग शर्मा ने सभी प्रत्याशियों को जीत पर बधाई दी और कहा कि कांग्रेस की जीत के साथ-साथ यह आम जनता की भी जीत हुई है।

उन्होंने कहा कि जनता ने भाजपा को आइना दिखाया है कि लोकतंत्र में जनता सर्वोपरी है और भाजपा तानाशाही पर उतर आई थी, जिसके परिणामस्वरूप आए दिन बढ़ रही महंगाई, पेट्रोल-डीजल की बढ़ती कीमतों का प्रदेश की जनता ने करारा जवाब दिया है। जिसके कारण भाजपा की जयराम सरकार को इन उपचुनाव में मुंह की खानी पड़ी है। उन्होंने कहा कि यह भाजपा के लिए चुनौती है जिस तरह पूर्व में नगर निगम चुनाव और अब जिस तरह से लोकसभा और विधानसभा उपचुनाव में भाजपा को 4-0 से हार का सामना करना पड़ा है, यह संकेत है कि भाजपा सरकार की तानाशाही अब और नहीं चलेगी और भाजपा को आने वाले आम विधानसभा चुनाव 2022 में भी हार का सामना करना पड़ेगा।

हमें भूत के बारे में पछतावा नहीं करना चाहिए, ना ही भविष्य के बारे में चिंतित होना चाहिए, विवेकवान व्यक्ति हमेशा वर्तमान में जीते हैं।.....चाणक्य

सम्पादकीय

क्यों हारी जय राम सरकार

जयराम सरकार प्रदेश में हुए चारों उपचुनाव हार गयी है। उपचुनाव पार्टी की नीतियों या कार्यक्रमों पर नहीं वरन् सरकार की कारगुजारीयों पर जनता की मोहर होते हैं। यह उपचुनाव सरकार के चार साल के कार्यकाल पर जनता का फैसला है जिसमें यह सामने आ गया कि जनता सरकार के कामकाज और उसकी शैली से सहमत नहीं है। शैल के पाठक जानते हैं कि हमने समय-समय पर सच जनता और सरकार के सामने रखने का पूरा प्रयास किया है। यहां तक कह दिया कि चुनाव परिणाम एक तरफा होने जा रहे हैं क्योंकि सरकार के पक्ष में कुछ नही है। यह आकलन सही सिद्ध हुआ। जब मण्डी में पिछली बार के 4 लाख से भी अधिक के अंतराल से हुई हार को पारकर कांग्रेस ने यह सीट 7490 के अन्तर से जीत ली और जुब्बल कोटखाई में भाजपा प्रत्यासी जमानत भी नहीं बचा पायी सभी बीस विधानसभा क्षेत्रों में नोटा का प्रयोग होना भी यही प्रमाणित करता है। मुख्यमंत्री ने इस हार का कारण महंगाई को बताया है लेकिन वह यह भूल गये कि इसी महंगाई के चलते हरियाणा को छोड़कर अन्य भाजपा शासित राज्यों में भाजपा ने जीत दर्ज की है। इसलिए इस हार के कारण कुछ और हैं।

इन कारणों पर चर्चा करने के लिए 2017 के विधानसभा चुनावों के दौरान भाजपा द्वारा उस समय की कांग्रेस सरकार के खिलाफ लगाये गये कुछ आरोपों पर नजर डालना आवश्यक होगा। उस समय की सरकार पर वित्तीय कुप्रबंधन के कारण प्रदेश पर कर्ज का बढ़ना, भ्रष्टाचार, रिटायर्ड और टायर्ड लोगों द्वारा सरकार चलाया जाना तथा लोक सेवा आयोग में मीरा वालिया कि नियुक्ति को नियमों के विरूध करार देना मुख्य आरोप थे। इन आरोपों को लेकर चुनाव प्रचार के दौरान एक विशेष पर्चा जारी किया गया था। सरकार बनने के बाद पहले बजट भाषण में वीरभद्र सरकार पर अठारह हजार करोड का अतिरिक्त कर्ज लेने का आरोप लगाया गया। लेकिन प्रदेश की वितिय स्थिति पर कोई श्वेत पत्र जारी नहीं किया। बल्कि वित विभाग के सचिव तक को नहीं बदला गया। लोक सेवा आयोग में नियमों के विरूद्ध नियुक्ति होने का आरोप लगाकर उन्हीं नियमों के तहत आयोग में दो पद सृजित करके एक को भर भी लिया गया। सर्वोच्च न्यायालय और प्रदेश उच्च न्यायालय के निर्देशों के बावजूद आज तक लोक सेवा आयोग के लिए नियम नहीं बनाये गये। पूर्व सरकार पर रिटायरड और टायरड अधिकारियों द्वारा सरकार चलाने के आरोप लगाकर अपनी सरकार मे भी वही सब कुछ किया गया। आज चार वर्षों से भी कम समय में बीस हजार करोड़ से अधिक का कर्ज सरकार ले चुकी है। भ्रष्टाचार को मुद्दा बनाकर सता में आयी सरकार ने पहले दो माह में भी हाइड्रो कॉलेज के निर्माण में दस करोड़ से अधिक का नुकसान प्रदेश का किया और जब यह सवाल विधानसभा तक भी पहुंच गया तब भी सरकार ने इसका कोई संज्ञान नहीं लिया। इसी तरफ पिछली सरकार में जिस स्कूल वर्दी घोटाले ने पूरे प्रदेश को हिलाकर रख दिया था उसमें हुई जांच के बाद सप्लायरों को पांच करोड़ का जुर्माना वसूल कर लिया गया था। उस जुर्माने को आब्रिट्रेशन के कमजोर फैसले पर लौटा दिया गया। उसमें शिक्षा विभाग और शिक्षामंत्री के फाइल पर लिखित आग्रह के बावजूद उच्च न्यायालय में अपील नहीं की गयी।

जब सरकार के शुरु के फैसले में ही भ्रष्टाचार के खिलाफ कारवाई करने की बजाये उसे संरक्षण देने की नीयत और नीति सामने आ गयी तब सबके हौसले बुलंद हो गये। इससे बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार हो गया। एक मंत्री द्वारा अपने क्षेत्र के कुछ लोगों को नौकरियां देने के लिये लिखे सिफारशी पत्र वायरल हुए। इसके बाद तो सरकार के खिलाफ ऐसे पत्रों की एक तरह से बाढ़ ही आ गयी। ऐसे पत्रों में उठाये गये मामलों की जांच करने की बजाये यह पत्र लिखने के लिये शक के आधार पर कुछ लोगों के खिलाफ पुलिस में मामले दर्ज कर लिये गये ताकि विरोधियों की आवाज को दबाया जा सके। इस तरह के पत्रों को जनता के सामने रखने का साहस जब शैल ने दिखाया तो उसकी आवाज को दबाने के लिये सरकार ने विज्ञापन बंद करने से लेकर विजिलेन्स में फर्जी मामले तक बना दिये। इन्ही भ्रष्टाचार के मामलों को लेकर स्वास्थ्य विभाग के निदेशक की गिरफ्तारी तक हुई। स्वास्थ्य मंत्री और विधानसभा अध्यक्ष तक के पदों की बदला-बदली की गयी। यही नहीं आज भ्रष्टाचार की चर्चा यहां तक पहुंच चुकी है कि एक उप सचिव स्तर के अधिकारी का परिवार तीन पैट्रोल पम्पो का मालिक हो गया है। कई सत्ता में बैठे लोगों ने चंडीगढ़, दिल्ली, लुधियाना और अमृतसर में संपत्ति खड़ी कर रखी हैं। सरकार के अधिकांश शीर्ष पदों पर ऐसे अधिकारी तैनात हैं जिन्हें नियमानुसार संदिग्ध चरित्र की श्रेणी में होना चाहिये परंतु वह सरकार चला रहे हैं। अदालत के फैसलों पर अमल न करना और इस आशय के पत्रों का जवाब तक ना देना सरकार की नीति बन चुकी है। जिस सरकार के मंत्रीमण्डल की बैठकों की लाइव जानकारी कुछ पत्रकारों तक पहुंच जाये उस सरकार के सलाहकारों के स्तर का अन्दाजा लगाया जा सकता है। ऐसे दर्जनों प्रकरण हैं जिनके कारण मुख्यमंत्री और सरकार की छवि लगातार गिरती चली गयी। सरकार को मीडिया का एक बड़ा वर्ग हरा ही हरा दिखाता रहा और सूखा सामने रखने वालों की आवाज दबाने का प्रयास लोकसंपर्क विभाग करता रहा । जो सरकार दिवार पर लिखे हुए को पढ़ने की बजाये उस पर आंखें बंद कर ले तो उसका परिणाम चार शुन्य ही होना था।

आस्था का आध्यात्मिक आयाम बाबा केदारनाथ

प्रो. मंजुला राणा
हिंदी-विभाग
हेमवतीनंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल

हिमालयी राज्य उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में स्थित केदारनाथ धाम विश्व की आस्था एवं आध्यात्मिक चेतना का पर्याय है, जहां जनमानस देवत्व की प्राप्ति के साथ-साथ देवभूमि में कण-कण में भगवान शंकर की उपस्थिति का आभास पाता है। यह स्थान धार्मिक महत्व के साथ-साथ अपनी प्राकृतिक आभा के लिए भी वैश्विक पटल पर भारत के आध्यात्मिक ऐश्वर्य एवं सौंदर्य को अंकित करता है। इसी सुरम्य परिवेश में भगवान भोलेनाथ का प्रसिद्ध ज्योतिलिंग केदारनाथ स्थित है। प्रसिद्ध 12 ज्योतिलिंगों में से एक अपने रुद्र रूप में भगवान शिव 3584 मीटर की ऊँचाई पर स्थित केदारनाथ धाम में स्वयंभू शिव के रूप में इसी स्थान पर विराजमान रहते हैं। सर्वप्रथम आदि शंकराचार्य ने इस मंदिर का जीर्णोधार करवाया था। इसी रूद्र रूप की परिकल्पना के कारण इस संपूर्ण क्षेत्र को रुद्रप्रयाग कहा गया है। हिमाच्छादित केदारनाथ धाम के कपाट अप्रैल-मई माह में ओंकारेश्वर मंदिर ऊखीमठ द्वारा विधि विधान से घोषित तिथि के उपरांत खुलते हैं तथा दीपावली के पश्चात बंद कर दिए जाते हैं। शीतकाल में 06 माह भगवान केदारनाथ की चल-विग्रह डोली एवं दंडी ऊखीमठ में पूजा-अर्चना हेतु स्थापित की जाती है। इस धाम का तापमान शीत ऋतु में शून्य से बहुत नीचे पहुंच जाता है।

यह मंदिर तीनों ओर से उच्च हिमालयी पर्वत श्रृंखलाओं से अलंकृत है। एक तरफ से करीब 22 हजार फुट ऊँचा केदारनाथ, दूसरी तरफ 21 हजार 600 फुट ऊँचा खर्चकुंड तथा तीसरी ओर 22 हजार 700 फुट ऊँचा भरतकुंड इस धाम को आच्छादित किए हुए हैं। इसी अलौकिक सुरक्षा के साथ-साथ इसे मंदाकिनी, मधुगंगा, क्षीरगंगा, सरस्वती और स्वर्ण गौरी जैसी पुण्यसलिलाओं का साहचर्य भी प्राप्त है। वस्तुतः, ये नदियां कल्याणकारी माँ के समान अहर्निश इस मंदिर की सेवा में समर्पित हैं। पांडव वंशीय जन्मेजय द्वारा इसे कत्यूरी शैली में बनाया गया है।

स्कंद पुराण में वर्णित पौराणिक मान्यताओं के अनुसार नर-नारायण ने हिमालय के केदारश्रृंग (पर्वत) पर पार्थिव लिंग बनाकर अनेक वर्षों तक तपस्या की, उनकी सघन तपस्या से प्रसन्न होकर महादेव ने उन्हें दर्शन दिए तथा उन्हीं नर-नारायण के विशिष्ट आग्रह से भगवान शिव ज्योतिलिंग स्वरूप में वहीं पर विराजमान हो गए।

इसी क्रम में पुराणों में वर्णित पंच केदार की कथा के आख्यान से भी इस धाम के महत्व को समझा जा सकता है। लोक में व्याप्त अवधारणा के अनुसार महाभारत के युद्ध में विजयी होने के उपरांत पांडव अपने सगोत्रियों की हत्या के पाप से मुक्त होना चाहते थे तथा ऋषिवर व्यास के परामर्श से भगवान शिव की शरण ही उन्हें पाप मुक्ति दिला सकती थी। इसी मुक्ति की कामना के साथ पांडवों ने बद्रीनाथ धाम के लिए प्रस्थान किया। भगवान शंकर ने पांडवों की परीक्षा लेनी चाही और वे अंतर्ध्यान होकर केदार जा बसे। पांडवों को जब पता चला तो वे भी उनके पीछे-पीछे केदार पर्वत पर पहुंच गए। भगवान शिव ने पांडवों को आते देख भैंस का रूप धारण कर लिया और पशुओं के झुंड में जा मिले। तब पांडवों ने भगवान के दर्शन पाने के लिए एक योजना बनाई और भीम ने अपना विशाल रूप धारण कर अपने दोनों पैर केदार पर्वत के दोनों ओर फैला दिए। कहा जाता है कि अन्य सब पशु तो भीम के पैरों के नीचे से निकल गए लेकिन शंकर जी रूपी भैंस पैरों के नीचे से निकलने को तैयार नहीं हुआ। जब भीम ने उस भैंस को जबरदस्ती पकड़ना चाहा तो भोलेनाथ विशाल रूप धारण कर धरती में समाने लगे। उसी क्षण भीम ने बलात भैंस की पीठ का भाग कस कर पकड़ लिया। भगवान शंकर पांडवों की भक्ति, दृढ़ संकल्प देखकर प्रसन्न हुए और उन्होंने तत्काल दर्शन देकर पांडवों को पापमुक्त कर दिया। उसी समय से भगवान शंकर भैंस की पीठ की आकृति-पिंड के रूप में श्री केदारनाथ में पूजे जाते हैं। केदार शब्द का अर्थ दलदल के रूप में भी माना जाता है अर्थात् वह स्थान जो मनुष्य को सांसारिक दलदल से मुक्ति दिलाता है।

पड़ोसी राष्ट्र नेपाल में स्थित पशुपतिनाथ का सीधा संबंध केदारनाथ से माना जाता है। शास्त्रों के अनुसार यह ज्योतिलिंग उत्तराखंड में स्थित केदारनाथ का ही हिस्सा है अर्थात् धड़ से नीचे का भाग केदार शिव भारत में तथा ऊपरी भाग पशुपतिनाथ के रूप में पूजनीय है। धार्मिक सद्भावना के साथ विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि भारतवर्ष के धार्मिक स्थलों ने भी पारस्परिक प्रेम एवं सद्भाव को जीवित रखने के लिए अपनी शास्त्रगत मान्यताओं का दूसरे देशों के साथ अद्भुत संयोग स्थापित किया है। अनेकानेक जनश्रुतियों ने मौखिक तथा लिखित रूप से लोकतत्वों के साथ मिलकर इस धाम की महिमा गायी है।

यहां की वादियों की अलौकिक शांति संपूर्ण राष्ट्र ही नहीं अपितु विश्व के मनीषियों-साधु संतों को आध्यात्म की खोज के लिए आमंत्रित करती है। यहां स्थित उडडारों (गुफा) में अनेक चिंतकों ने ध्यानावस्थित होकर शारीरिक एवं मानसिक शांति प्राप्त की है। वर्तमान में केंद्र एवं प्रदेश सरकार के प्रयासों द्वारा केदारनाथ धाम में पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था की गई है। यात्री अपनी क्षमता के अनुसार हवाई यात्रा अथवा सड़क द्वारा बहुत सुगमता से केदारनाथ धाम पहुंच सकते हैं। हमारे देश के प्रधानमंत्रीनरेन्द्र मोदी जी ने अपने ड्रीम प्रोजेक्ट में इस धाम को सर्वजन सुलभ बनाने का संकल्प लिया है तथा इसी के अनुरूप यहां समस्त सुगम साधनों का संचयन करवाया जा चुका है। यही कारण है कि प्रतिवर्ष करोड़ों की संख्या में भक्तजन यहां आकर देवाधिदेव के दर्शन करके शिवमय होना चाहते हैं। सचमुच अद्भुत है केदारनाथ धाम की महिमा और अलौकिक है इस स्थान का सौंदर्य।

स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाएं लखपति बनने की राह पर

शिमला। ग्रामीण विकास मंत्रालय ने महिलाओं को उच्च आर्थिक क्रम में ले जाने पर अधिक ध्यान देने के लिए, एसएचजी से जुड़ी ग्रामीण महिलाओं को लखपति बनाने के लिए एक पहल की शुरुआत की। इसका उद्देश्य ग्रामीण एसएचजी महिलाओं को प्रति वर्ष कम से कम 1 लाख रुपये कमाने में सक्षम बनाना है। इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को हासिल करने के लिए मंत्रालय ने अगले 2 वर्षों में 2.5 करोड़ ग्रामीण एसएचजी महिलाओं को आजीविका सहायता प्रदान करने की योजना बनाई है। देश भर में मौजूद विभिन्न म डलों के आधार पर राज्य सरकारों को एक विस्तृत एडवाइजरी जारी की गई है। 28 अक्तूबर, 2021 को इस विषय पर विशेष चर्चा के लिए राज्यों, बीएमजीएफ (बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन) और टीआरआईएफ (ट्रांसफोमेशन रूरल इंडिया फाउंडेशन) के साथ एक हितधारक परामर्श कार्यशाला आयोजित की गई थी।

28 अक्तूबर 2021 को हुई चर्चा में कृषि और इससे जुड़ी गतिविधियों से लेकर पशुधन, एनटीएफपी (गैर -लकड़ी वन उत्पाद) और इनके सम्मेलन के माध्यम से अन्य हस्तक्षेपों तक घरेलू स्तर पर आजीविका गतिविधियों में विविधता लाने के लिए सुनियोजित हस्तक्षेपों के महत्व पर जोर दिया गया। ताकि लगातार एक लाख रुपये की सालाना आय हो सके। इस प्रकार के हस्तक्षेपों को लागू करने के लिए एसएचजी, वीओ (ग्राम संगठन) और सीएलएफ (क्लस्टर स्तर पर संघ) को मजबूत करने के महत्व पर भी जोर दिया गया। विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षित एसएचजी सदस्यों के समर्पित सामुदायिक कार्यकर्ता उनके लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता करेंगे। इस हस्तक्षेप में नागरिक समाज संगठनों, केवीके (कृषि विज्ञान केंद्र) और निजी बाजार के अन्य खिलाड़ियों की भूमिका महत्वपूर्ण है। राज्यों को भी इन साझेदारियों को प्रोत्साहित करने और मजबूत बनाने की सलाह दी गई थी।

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन एक परिपूर्णता वालीसोच पर काम करता है। इस कार्यक्रम के तहत अब तक 7.7 करोड़ महिलाओं को 70 लाख स्वयं सहायता समूहों में शामिल करने के साथ 6768 ब्लॉकों को कवर किया गया है। एसएचजी को प्रारंभिक पूंजीकरण सहायता प्रदान करने से लेकर सालाना लगभग 80 हजार करोड़ रुपये की सहायता दी जा रही है। इस मिशन के तहत, विभिन्न वर्ग और जाति की गरीब महिलाएं स्वयं सहायता समूहों और उनके संघों में शामिल होती हैं, जो अपने सदस्यों को उनकी आय और जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए वित्तीय,आर्थिक और सामाजिक विकास सेवाएं प्रदान करते हैं।

वर्षों से एसएचजी द्वारा बैंक पूंजीकरण सहायता के माध्यम से उधार ली गई इस धनराशि का उपयोग अब आजीविका के विविध अवसर पैदा करने के लिए किया जा रहा है। हालांकि, इन कोशिशों से सकारात्मक बदलाव दिख रहे हैं, फिर भी यह महसूस किया गया है कि महिला एसएचजी सदस्यों की स्थायी आजीविका और सम्मानजनक जीवन सुनिश्चित करने यानी उन्हें लखपति बनाने के लिए प्रति वर्ष कम से कम 1,00,000 रुपये की उनकी आय सुनिश्चित करने के लिए ठोस प्रयास करने की आवश्यकता है। एक लाख रुपये का यह आंकड़ा ग्रामीण एसएचजी महिलाओं के लिए आकांक्षी और प्रेरणादायक दोनों है।

दीनदयाल अंत्योदय योजना ग्रामीण विकास मंत्रालय की एक प्रमुख योजना है जो ग्रामीण गरीब महिलाओं के लिए क्षमता निर्माण और विविध आजीविका के अवसर पैदा करने पर ध्यान देने के साथ ग्रामीण गरीबों को स्व-शासित संस्थानों में संगठित करती है। मिशन ने महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना के माध्यम से सफल प्रगति की है और किसानों के रूप में महिलाओं की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया है। सामुदायिक एकजुटता और महिलाओं की संस्थाओं के निर्माण के चरण से आगे बढ़ते हुए, अब ध्यान एसएचजी महिलाओं को उत्पादक समूहों, एफपीओ और निर्माता कंपनियों के माध्यम से उच्च क्रम की आर्थिक गतिविधियों में शामिल करने पर है।

उचित मूल्य की दुकानों की वित्तीय व्यवहार्यता बढ़ाने के लिए सकारात्मक कदम उठाए जाएंगे:खाद्य सचिव

शिमला। खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग के सचिव सुधांशु पांडेय ने उचित मूल्य की दुकानों की वित्तीय व्यवहार्यता बढ़ाने पर एक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में इसके लिए सकारात्मक कदम उठाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, वित्तीय सेवा विभाग (डीएफएस), पेट्रोलियम और

प्राकृतिक गैस मंत्रालय, इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड (आईओसीएल), भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल), हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल), सीएससी ई-गवर्नेंस सर्विसेज इंडिया लिमिटेड (सीएससी) तथा सभी राज्यों /केंद्र शासित प्रदेशों के प्रतिनिधियों ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में भाग लिया।

सीएससी के सीईओ ने सीएससी द्वारा उपलब्ध विभिन्न सेवाओं के बारे में एक प्रस्तुति दी। इसके बाद, सीएससी द्वारा इस पहल को आगे बढ़ाने के लिए अलग-अलग राज्य/केंद्र शासित प्रदेशों की सरकारों के साथ मिलकरआयोजितअनेक गतिविधियों पर एक नवीनतम विवरण प्रस्तुत किया गया। राज्य/केन्द्र शासित प्रदेशों की सरकारों के प्रतिनिधियों ने एफपीएस की व्यवहार्यता बढ़ाने के लिए सीएससी के साथ सहयोग की सराहना की और बताया कि वे स्थानीय जरूरतों और आवश्यकताओं के अनुसार व्यवहार्यता की समीक्षा करने के लिए सीएससी के साथ समन्वय करेंगे।

खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग के सचिव ने सीएससी को सलाह दी कि वे राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों के विभिन्न समूहों के साथ उनकी वर्तमान स्थिति के आधार पर अलग-अलग कार्यशालाएं/वेबिनार आयोजित करें, ताकि संभावित लाभों, उचित मूल्य की दुकानों के क्षमता निर्माण के बारे में जानकारी दी जा सके और इन पहलों के कार्यान्वयन में उनकी सहायता की जा सके।

तेल विपणन कंपनियों के प्रतिनिधियों ने उचित मूल्य की दुकानों के माध्यम से छोटे एलपीजी सिलेंडरों की खुदरा बिक्री के प्रस्ताव की सराहना की और बताया कि इच्छुक राज्य/केन्द्र शासित प्रदेशों की सरकारों के साथ मिलकर इसके लिए आवश्यक सहायता प्रदान की जाएगी।

वित्तीय सेवा विभाग के प्रतिनिधि ने उचित मूल्य की दुकानों के माध्यम से वित्तीय सेवाएं प्रदान करने, पूंजी वृद्धि के लिए उचित मूल्य की दुकानों के डीलरों को मुद्रा ऋण देने के प्रस्ताव की सराहना की और बताया कि इच्छुक राज्य/केन्द्र शासित प्रदेशों की सरकारों के साथ मिलकर इसके लिए आवश्यक सहायता प्रदान की जाएगी।

अपने समापन संबोधन में खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग के सचिव ने कहा कि विभिन्न राज्य/केंद्र शासित प्रदेश इन पहलों को शुरू कर सकते हैं और अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप इसे तैयार कर सकते हैं। खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग के सचिव ने राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को इन पहलों के लाभों के बारे में उचित मूल्य की दुकानों के डीलरों को संवेदनशील बनाने के लिए एक साथ निरंतर जागरूकता और आउटरीच अभियान चलाने की सलाह दी

फ्लिपकार्ट ने भारत सरकार के राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के साथ हाथ मिलाया

शिमला। केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय (एमओआरडी) ने अपनी महत्वाकांक्षी दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (डीएवाई- एनआरएलएम) कार्यक्रम के तहत खासतौर से महिलाओं की अगुवाई में चल रहे स्थानीय कारोबार व स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) को सशक्त बनाने और उनको ई-कॉमर्स के दायरे में लाने के लिए भारत के घरेलू ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस फ्लिपकार्ट के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। यह साझेदारी डीएवाई- एनआरएलएम के स्व- रोजगार और उद्यमिता के लिए ग्रामीण समुदायों की क्षमताओं को मजबूती प्रदान करने के लक्ष्य के साथ जुड़ी हुई है। इस प्रकार प्रधानमंत्री के 'आत्मनिर्भर भारत' के विजन को प्रोत्साहन मिलेगा।

केंद्रीय ग्रामीण विकास और पंचायती राज मंत्री गिरिराज सिंह, ग्रामीण विकास राज्यमंत्री साध्वी निरंजन ज्योति की उपस्थिति में संयुक्त सचिव (आरएल), डीएवाई-एनआरएलएम, चरणजीत सिंह और फ्लिपकार्ट के मुख्य कॉरपोरेट मामलों के अधिकारी रजनीश कुमार ने दिल्ली में 02 नवंबर, 2021 को एमओयू पर हस्ताक्षर किए।

इस अवसर पर गिरिराज सिंह ने कहा, ''एसएचजी ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं और हम उनकी वार्षिक आय बढ़ाकर कम से कम 1 लाख रुपये तक करने का लक्ष्य लेकर चल रहे हैं। हम उन सभी संभावित भागीदारों की पहचान और उनके साथ सहयोग कर रहे हैं जो इस काम में योगदान दे सकते हैं। डीएवाई एनआरएलएम और फ्लिपकार्ट के बीच साझेदारी से इस प्रक्रिया में मदद मिलेगी। एसएचजी के ग्रामीण उत्पादों को देश-विदेश में लोगों द्वारा पसंद करने की काफी संभावनाएं हैं और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म इस कार्य में एक प्रभावी साधन साबित होगा। सिंह ने कहा कि एमओयू से ग्रामीण महिलाएं फ्लिपकार्ट के 10 करोड़ से अधिक ग्राहकों को अपने उत्पाद बेच पाएंगी।

यह एमओयू फ्लिपकार्ट समर्थ कार्यक्रम का हिस्सा है और इसका मकसद कुशल शिल्पकारों, बुनकरों और कारीगरों के समुदाय जो पर्याप्त सुविधा से वंचित रहे हैं उनको फ्लिपकार्ट मार्केटप्लेस के माध्यम से राष्ट्रीय बाजार की पहुंच के साथ-साथ ज्ञान और प्रशिक्षण के लिए पूर्ण सहयोग प्रदान करना है। फ्लिपकार्ट समर्थ ऑनबोर्डिंग, कैटलॉगिंग, मार्केटिंग, अकाउंट मैनेजमेंट, बिजनेस इनसाइट्स और वेयरहाउसिंग के सहयोग के साथ समयबद्ध पूरी सेवाएं प्रदान करके स्थानीय समुदायों के कारोबारी बाधाओं को दूर करने का प्रयास करता है। इससे व्यवसाय और व्यापार समावेश को बढ़ाने के लिए और अधिक अवसर मिलेगा और बेहतर आजीविका के अवसरों पैदा करने तथा उसे बनाए रखने में मदद मिलेगी।

एमओआरडी के डीएवाई-एनआरएलएम कार्यक्रम के तहत देश के 28 राज्यों और 6 केंद्र शासित प्रदेशों के 706 जिलों के 6768 ब्लॉकों स्थित 71 लाख से अधिक एसएचजी में 7.84 करोड़ महिलाएं शामिल हैं। ये एसएचजी गरीब ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने में एक गेम चैंजर पहल साबित हो रही है।

मिशन के तहत एचएचजी और उनके संघों में विभिन्न वर्ग और जाति की गरीब महिलाओं का व्यापक प्रतिनिधित्व है जो अपने सदस्यों को उनकी आय और जीवन की गुणवत्ता सुधारने में वित्तीय, आर्थिक और सामाजिक विकास सेवाएं प्रदान करती हैं। आजीविका संबंधी कार्यकलापों को प्रोत्साहन देने के प्रयास के तौर पर एनआरएलएम द्वारा राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर इन एसएचजी द्वारा निर्मित ग्रामीण उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए सरस मेले, सरस गैलरी और खुदरा दुकानों, राज्य के स्वामित्व वाले ऑनलाइन ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म व अन्य वाणिज्यिक ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म प्रदान करने के लिए निरंतर प्रयास किए गए हैं।

चरणजीत सिंह, संयुक्त सचिव (कौशल), डीएवाई-एनआरएलएम ने कहा, ''फ्लिपकार्ट समर्थ के साथ डीएवाई-एनआरएलएम की साझेदारी से खासतौर से महिलाओं को ग्रामीण आजीविका की क्षमता बनाने और उसे उन्नत बनाने तथा उस पर प्रभाव डालने के लिए एक बड़ा प्लेटफॉर्म मिलेगा। इस कदम से ग्रामीण कारोबार तैयार करने और उसमें मदद के लिए जरूरी संसाधन जुटाने के साथ-साथ उन्हें दिशा प्रदान की जाएगी ताकि उनके विकास की पूरी संभावना को महसूस किया जा सके जोकि समावेशी और मजबूत राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक है, विशेष तौर पर मौजूदा पोस्ट-कोविड काल में जरूरी है।''

फ्लिपकार्ट समूह के कॉर्पोरेट मामलों के प्रमुख रजनीश कुमार ने कहा, ''हम भारतीय बाजार के अपने ज्ञान का उपयोग पर्याप्त सुविधा से वंचित रहने वाले समुदायों के सामाजिक और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए उपयोग कर रहे हैं, जिनमें से अनेक ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं।

भारत के स्थानीय कारीगरों, बुनकरों और स्वयं सहायता समूहों की शिल्पकारी को उनके क्षेत्र के बाहर व्यापक क्षेत्र के दर्शकों तक पहुंचाया जाना चाहिए। फ्लिपकार्ट समर्थ पहल उन्हें देशभर में फैले अपने प्लेटफॉर्म पर तकरीबन 35 करोड़ से अधिक उपभोक्ताओं तक पहुंच प्रदान करता है। हम डीएवाई-एनआरएलएम के साथ साझेदारी करके प्रसन्न हैं और सम्मानित महसूस कर रहे हैं कि हम राष्ट्र निर्माण के एक महत्वपूर्ण पहलू में योगदान करने में सक्षम हैं।''

फ्लिपकार्ट समर्थ कार्यक्रम को 2019 में एक स्थायी और समावेशी मंच के रूप में लांच किया गया था जिससे देश में पर्याप्त सुविधाओं से वंचित समुदायों को सशक्त बनाने के लिए उन्हें बेहतर अवसर व आजीविका कारोबार में सहयोग किया जाए। फ्लिपकार्ट समर्थ इस समय पूरे भारत में 9,50,000 से अधिक कारीगरों, बुनकरों और शिल्पकारों की आजीविका में मदद कर रहा है, और लगातार अधिक से अधिक विक्रेताओं को प्लेटफॉर्म पर लाने का काम कर रहा है।

टेलीमेडिसिन एक विकल्प ही नहीं बल्कि यह एक आवश्यकता है केन्द्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह

शिमला। केन्द्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि टेलीमेडिसिन प्रौद्योगिकी लागू करने से भारत को सालाना 5 बिलियन डॉलर की बचत हो सकती है।

केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि टेलीमेडिसिन एक विकल्प ही नही बल्कि अब यह एक आवश्यकता बन गई है। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं की सभी के लिए सुलभता, उपलब्धता और किफायत सुनिश्चित करने के लिए डिजिटल हेल्थ अगला उपाय है।

बेहतर कल के लिए स्वास्थ्य देखभाल में बदलाव' विषय पर सीआईआई एशिया स्वास्थ्य सम्मेलन 2021 को संबोधित करते हुए डॉ. जितेंद्र सिंह ने भारत जैसे देशों में टेलीमेडिसिन के नवीन स्वास्थ्य देखभाल उपायों को लागू किए जाने का आहवान किया, जहां चिकित्सा पेशेवरों की कमी है और जहां ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लाखों की संख्या में लोग उचित स्वास्थ्य देखभाल या उपचार की सीधी पहुंच से वंचित हैं।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि टेली–मेडिसिन प्रौद्योगिकी के क्रियान्वयन से भारत को हर साल 4 से 5 बिलियन अमेरिकी डॉलर की बचत हो सकती है और अस्पतालों के बाह्य रोगी विभाग (ओपीडी) में आने वाले मरीजों की संख्या को आधा किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि देश में टेलीमेडिसिन व्यक्तिगत रूप से अस्पताल में जाकर चिकित्सक की परामर्श लेने की तुलना में 30% तक सस्ती साबित हुई है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वास्थ्य क्षेत्र को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। इसी कारण इस वर्ष के बजट में स्वास्थ्य देखभाल पर खर्च में 137% की वृद्धि की गई और यह सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 2.5%–3% की उद्योग जगत की अपेक्षाओं के अनुरूप पहुँच गया है। साथ ही यह राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 के 2025 तक 2.5% के लक्ष्य के भी अनुरूप है। केंद्रीय मंत्री ने बताया कि भारत इस वर्ष स्वास्थ्य पर 2.23 लाख करोड़ रुपये खर्च करेगा, जिसमें कोविड–19 टीकों के लिए खर्च किया गया 35,000 करोड़ रुपये का व्यय भी शामिल है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने बताया कि कोविड–19 महामारी के कारण स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने नीति आयोग के साथ मिलकर टेलीमेडिसिन प्रैक्टिस गाइडलाइंस तैयार की, जिसने पंजीकृत चिकित्सकों (आरएमपी) को टेलीमेडिसिन प्लेटफॉर्म के माध्यम से डिजिटल स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए स्वास्थ्य सेवाएं देने की अनुमति दी। उन्होंने कहा कि इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लोगों को एक डिजिटल हेल्थ आईडी प्रदान करने के लिए आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन की शुरुआत की, जिसमें लोगों के स्वास्थ्य संबंधी सभी रिकॉर्ड दर्ज होंगे। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि आने वाले वर्षों में विशेष रूप से देश भर में अधिक से अधिक इंटरनेट पहुंच के साथ टेलीमेडिसिन के क्षेत्र में व्यापक उछाल आयेगा।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य देखभाल का केंद्र बन रही है क्योंकि इससे स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता बढ़ती है, मरीजों का सशक्तिकरण होता है और सक्रियता बढ़ती है। साथ ही यह देखभाल के लिए बेहतर स्व–प्रबंधन में सक्षम बनाता है। यह स्वास्थ्य देखभाल की लागत को कम करते हुए स्वास्थ्य देखभाल की गुणवत्ता, दक्षता और सुरक्षा में सुधार के प्रयासों के प्रमुख घटकों में से एक है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि मोदी सरकार द्वारा स्वास्थ्य देखभाल के लिए विभिन्न योजनाओं की शुरुआत की गई। जिनमें प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन, आयुष्मान भारत जन आरोग्य योजना, आयुष्मान स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र, प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना (पीएमबीजेपी) और आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन शामिल हैं। इन योजनाओं ने देश के करोड़ों गरीबों के लिए स्वास्थ्य सुविधाओं को सुलभ और सस्ता बना दिया है।

स्वास्थ्य शिखर सम्मेलन में डॉ. नरेश त्रेहन, अध्यक्ष, सीआईआई स्वास्थ्य देखभाल परिषद और सीएमडी, मेदांता–मेडिसिटी(क्रिस गोपाल कृष्णन, पूर्व अध्यक्ष, सीआईआई और संस्थापक सदस्य, इंफोसिस(पंकज साहनी–मुख्य कार्यकारी अधिकारी, मेदांता–मेडिसिटी(डॉ.मृदुल कौशिक–मुख्य कार्यकारी अधिकारी, मैक्स हेल्थकेयर प्राइवेट लिमिटेड(शशांक एनडी, अध्यक्ष, डिजिटल स्वास्थ्य पर सीआईआई उप–समिति, सीईओ और सह–संस्थापक, प्रैक्टो(धर्मिल शाह, संस्थापक, फार्मईजी और प्रशांत टंडन, संस्थापक, टाटा 1 एमजी ने भाग लिया।

2014–20 के दौरान आयुष क्षेत्र की वृद्धि 17% पर आंकी गयी

शिमला। केंद्रीय आयुष मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने कहा कि बढ़ती वैश्विक और घरेलू मांग से उत्साहित तथा मंत्रालय द्वारा नियामक, अनुसंधान एवं विकास और बैक–एंड बुनियादी ढांचे के लिए एक मजबूत समर्थन से सक्षम हुए, आयुष का बाजार आकार 2014–20 में 17 प्रतिशत बढ़कर 18.1 अरब डॉलर तक पहुंच गया है। सोनोवाल नई दिल्ली में 'अयूर–उद्यम' के उद्घाटन के अवसर पर बोल रहे थे, जहां उन्होंने 'भारत में आयुष क्षेत्र, संभावनाएं और चुनौतियां' शीर्षक वाली आरआईएस रिपोर्ट जारी की। इस अवसर पर, आयुष मंत्रालय के अधीनस्थ एआईआईए आईसीएआईएनई–अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान–नवाचार और उद्यमिता विकास केंद्र (इनक्यूबेशन सेंटर फ र इनोवेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप) का उद्घाटन किया गया। जिसका उद्देश्य स्टार्ट–अप को बढ़ावा देना है। इस केंद्र का उद्घाटन केंद्रीय खाद्य और प्रसंस्करण उद्योग मंत्री पशुपति पारस ने किया।

विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली (आरआईएस) की रिपोर्ट के अनुसार, महामारी के कारण 2020 में आर्थिक गतिविधियों में मंदी के बावजूद, उद्योग के 2021 में 20.6 अरब डॉलर और 2022 में 23.3 अरब डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। वैश्विक हिस्सेदारी में, भारत दुनिया की तुलना में आयुष बाजार में तेजी से बढ़ा है और उसका बाजार में लगभग 2.8 प्रतिशत हिस्सा है जिसके बने रहने की संभावना है, हालांकि उत्पादन में व्यवधान की आशंका से इन्कार नहीं किया जा सकता है।

इसी अवधि के दौरान, विभिन्न उत्पाद खंड, समग्र उद्योग की तुलना में बहुत अधिक दर से बढ़े हैं। 2014–2020 की अवधि में प्लांट डेरिवेटिव्स में 21 प्रतिशत की वृद्धि हुई, इसके बाद न्यूट्रास्यूटिकल्स (20.5 प्रतिशत), फार्मास्यूटिकल्स (15.8 प्रतिशत), प्लांट एक्सट्रैक्ट्स (14.7 प्रतिशत) और हर्बल प्लांट्स (14.3 प्रतिशत) का स्थान रहा।

सोनोवाल ने कहा कि आयुष दवाओं ने पिछले डेढ़ साल में महामारी की पहली और दूसरी लहर के दौरान दुनिया भर में कोविड–19 रोगियों को तेजी से ठीक होने में मदद करने के साथ कारगर तरीके से काम किया है।

नए विकास केंद्र के बारे में बात करते हुए, सोनोवाल ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के स्वतंत्रता दिवस के भाषण का उल्लेख किया जहां उन्होंने कहा था कि स्टार्टअप देश में नए प्रकार के संपत्ति निर्माता हैं। सोनोवाल ने कहा, 'उन्होंने भारत के स्टार्ट–अप और स्टार्ट–अप इकोसिस्टम को दुनिया में सर्वश्रेष्ठ बनाने की दिशा में लगातार काम करने के लिए सरकार की आवश्यकता को रेखांकित किया। यह आत्मनिर्भर भारत के दीर्घकालिक दृष्टिकोण में योगदान देगा।'

मंत्री ने कहा कि नए विचारों को फलने–फूलने के लिए अनुकूल माहौल की जरूरत है और केंद्र युवा उद्यमियों को अपने उद्यम को आगे बढ़ाने से पहले खुद को स्थापित करने में मदद करेगा। सोनोवाल ने कहा, 'मुझे उम्मीद है कि स्टार्ट–अप पहल से आयुष उद्यमियों को व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य उत्पादों और सेवाओं के नवाचारों में मदद मिलेगी। आयुष मंत्रालय के सचिव राजेश कोटेच, एआईआईए की निदेशक प्रो. तनुजा मनोज ने और एआईआईए की पूरी टीम के नेतृत्व में यह खाद्य स्टार्ट अप पहल वाणिज्य मंत्रालय, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग और एमएसएमई मंत्रालय जैसे भारत सरकार के अन्य मंत्रालयों के साथ–साथ आयुष मंत्रालय के करीबी समन्वय के साथ काम करेगा और ज्ञान के आदान–प्रदान का एक आदर्श मंच होगा।'

मंत्री ने कहा कि एआईआईए एक मधुमेह प्रोटोकॉल तैयार करने की दिशा में भी काम कर रहा है, जहां पूरे देश के विशेषज्ञों ने सार्वजनिक स्वास्थ्य पहल में मधुमेह की रोकथाम और प्रबंधन में योगदान दिया है। उन्होंने कहा, 'प्रोटोकॉल चिकित्सकों, शोध विद्वानों और शिक्षाविदों को मधुमेह देखभाल की जरूरतों को पूरा करने और क्षेत्र में हाल में हुई प्रगति को जानने में मदद करेगा।'

आयुष राज्य मंत्री मुंजपारा महेंद्रभाई ने एआईआईए के ब्लड बैंक का उद्घाटन करते हुए कहा कि ब्लड बैंक दिल्ली और आसपास के राज्यों के मरीजों की जरूरतों को पूरा करेगा। उन्होंने कहा,'यह महत्वपूर्ण है कि ब्लड सैम्पल दान करते समय दानदाता सुरक्षित महसूस करें और कुशल एवं प्रशिक्षित डॉक्टरों के तहत एआईआईए में हाई एंड फिल्ट्रेशन मैकेनिज्म के साथ, हम यह सुनिश्चित करते हैं कि रक्त प्राप्त करने और दान करने से पहले सभी रोगियों की व्यापक जांच की जाए।'

केंद्रीय खाद्य और प्रसंस्करण उद्योग मंत्री पशुपति पारस ने एआईआईए आईसीएआईएनई विकास केंद्र का शुभारंभ किया। इस समारोह में पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस राज्य मंत्री रामेश्वर तेली और बंदरगाह, जहाजरानी एवं जलमार्ग राज्य मंत्री शांतनु भी शामिल हुए।

इस अवसर पर आरआईईएस–एफटीआईएम जर्नल का भी शुभारंभ किया गया। एआईआईए ने आयुष उप–क्षेत्र कौशल परिषद(एचएसएससी) के तहत बाल रक्षा किट और बच्चों के लिए प्रतिरक्षा बढ़ाने वाले स्वर्णप्राशन और क्वालिफिकेशन पैक्स भी पेश किए और वर्ष 2018–2021 के सर्वश्रेष्ठ निवर्तमान छात्रों को पुरस्कृत किया।

आयुष मंत्रालय दो नवंबर को छठे आयुर्वेद दिवस के रूप में मना रहा है और इस दिन राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर में महा आयोजनों सहित कई गतिविधियों की योजना बनाई है।

शिक्षा मंत्रालय ने चार वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम अधिसूचित किया

शिमला/शैल। शिक्षा मंत्रालय ने चार वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (आईटीईपी) को अधिसूचित किया है, जो एक दोहरी प्रमुख समग्र स्नातक डिग्री है जिसके तहत बी.ए. बी.एड./बी.एस.सी. बी.एड. और बी.कॉम. बी.एड. पाठयक्रम पेश किया गया है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत अध्यापक शिक्षा से संबंधित किए गए प्रमुख प्रावधानों में से एक है। एनईपी 2020 के अनुसार, वर्ष 2030 से शिक्षकों की भर्ती केवल आईटीईपी के माध्यम से होगी। इसे शुरू में देश भर के लगभग 50 चयनित बहु–विषयक संस्थानों में पायलट मोड में पेश किया जाएगा।

शिक्षा मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एनसीटीई) ने इस पाठयक्रम को इस तरह से तैयार किया है कि यह एक छात्र–शिक्षक को शिक्षा में डिग्री के साथ–साथ इतिहास, गणित, विज्ञान, कला, अर्थशास्त्र, या वाणिज्य जैसे विशेषीकृत विषयों में डिग्री प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। आईटीईपी न केवल अत्याधुनिक अध्यापन कला प्रदान करेगा, बल्कि प्रारंभिक बाल देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई), मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफएलएन), समावेशी शिक्षा, और भारत तथा इसके मूल्यों/ लोकाचार/ कलाओं/परंपराओं व अन्य चीजों की समझ विकसित करने में आधार तैयार करने का काम करेगा। आईटीईपी उन सभी छात्रों के लिए उपलब्ध होगा जो माध्यमिक शिक्षा के बाद शिक्षण को एक पेशे के रूप में लेना चाहते हैं। इस एकीकृत पाठयक्रम से छात्रों को काफी लाभ होगा क्योंकि वे वर्तमान बी.एड पाठयक्रम के लिए आवश्यक पांच साल के बजाय चार साल में ही इसे पूरा कर लेंगे, जिससे उनके एक साल की बचत होगी। चार वर्षीय आईटीईपी की शुरुआत शैक्षणिक सत्र 2022–23 से होगी। राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) द्वारा राष्ट्रीय सामान्य प्रवेश परीक्षा (एनसीईटी) के जरिए इस पाठयक्रम में प्रवेश दिया जाएगा। यह पाठयक्रम बहु–विषयक संस्थानों द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा और यह स्कूली शिक्षकों के लिए न्यूनतम डिग्री योग्यता बन जाएगा।

चार वर्षीय आईटीईपी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख उद्देश्यों में से एक को पूरा करने में एक मील का पत्थर साबित होगा। यह पाठयक्रम पूरे अध्यापक शिक्षा क्षेत्र के पुनरोद्धार में महत्वपूर्ण योगदान देगा। भारतीय मूल्यों और परंपराओं के आधार पर तैयार बहु–विषयक वातावरण के माध्यम से इस पाठयक्रम में पढ़ने वाले भावी शिक्षकों को वैश्विक मानकों पर 21वीं सदी की जरूरतों के अनुसार शिक्षा दी जाएगी और इस प्रकार यह नए भारत के भविष्य को आकार देने में काफी हद तक सहायक होगा।

इग्नू ने 12 नवम्बर 2021 तक बढ़ाई प्रवेश की अंतिम तिथि

शिमला। इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक सत्र जुलाई 2021 के लिए विभिन्न मास्टर डिग्री तथा बैचलर डिग्री कार्यक्रमों में प्रवेश की अंतिम तिथि 12 नवम्बर, 2021 तक बढ़ा दी है। प्रवेश प्रक्रिया ऑनलाइन रहेगी जिसके लिए लिंक इग्नू की वैबसाइट www.ignou.ac.in पर उपलब्ध है। जुलाई 2021 सत्र के लिए इग्नू में अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के छात्रों के लिए बी.ए, बी.कॉम, बी.एस.सी.कार्यक्रमों में निशुल्क शिक्षा का प्रावधान भी है। इग्नू से उच्च शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक छात्र प्रवेश के लिए 12 नवम्बर, 2021 तक आवेदन कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए इग्नू के किसी भी नजदीकी अध्ययन केन्द्र से या इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, खलीणी, शिमला के दूरभाष संख्या 0177–2624612 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन से राज्य में स्वास्थ्य नेटवर्क मजबूत होगा:मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उत्तर प्रदेश के वाराणसी से देश के लिए 64,000 करोड़ रुपये के प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन का शुभारंभ किया।

इस अवसर पर जनसभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि देश ने कोरोना महामारी के खिलाफ लड़ाई में 100 करोड़ वैक्सीन खुराक का एक बड़ा लक्ष्य हासिल किया है। उन्होंने कहा कि बाबा विश्वनाथ के आशीर्वाद, मां गंगा के प्रति दृढ़ आस्था और काशी के लोगों के अटूट विश्वास से सभी के लिए नि:शुल्क टीकाकरण का अभियान सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहा है।

मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने इस मेगा मिशन का शुभारंभ करने के लिए प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त किया और कहा कि यह अगले चार-पांच वर्षों में गांव से ब्लॉक स्तर तक स्वास्थ्य देखभाल नेटवर्क को मजबूत करने में दूरगामी भूमिका निभाएगा। उन्होंने कहा कि यह मिशन लोगों को उनके घरों के समीप विशेषज्ञ स्वास्थ्य सेवाएं सुनिश्चित करेगा।

जय राम ठाकुर ने कहा कि मिशन के तहत गांवों और शहरों में स्वास्थ्य एवं आरोग्य केंद्र खोले जाएंगे, जहां बीमारियों का शीघ्र पता लगाने की सुविधाएं उपलब्ध होंगी। उन्होंने कहा कि इन केन्द्रों में नि:शुल्क चिकित्सा परामर्श, नि:शुल्क जांच और दवाईयों की सुविधा उपलब्ध करवाई जाएगी। उन्होंने कहा कि इससे राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य के आधारभूत ढांचे को मजबूत करना सुनिश्चित होगा।

मुख्यमंत्री ने यह सुनिश्चित करने के लिए प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त किया कि इस मिशन के तहत हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी राज्यों में स्वास्थ्य के आधारभूत ढांचे को मजबूत करने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने टुटीकंडी में बालिका आश्रम के बच्चों को मिठाइयां बांटी

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने अपनी धर्मपत्नी व राज्य रेड क्रॉस अस्पताल कल्याण शाखा की अध्यक्ष डॉ. साधना ठाकुर के साथ बालिका आश्रम, टुटीकंडी का दौरा किया और दीपावली के अवसर पर आश्रम के बच्चों को मिठाइयां वितरित की।

मुख्यमंत्री ने बच्चों को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भगवान राम के 14 वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या लौटने के उपलक्ष्य में प्राचीन काल से ही पूरे विश्व में दीपावली मनाई जाती रही है। उन्होंने कहा कि इस आश्रम के बच्चों के साथ उत्सव मनाना वास्तव में सुखदायक है। उन्होंने आश्रम के विद्यार्थियों की प्रतिभा की सराहना की और अधिकारियों से कहा कि विद्यार्थियों को जीवन में उत्कृष्टता प्राप्त करने और राष्ट्र के विकास में योगदान देने के लिए हर संभव सहायता प्रदान करें। मुख्यमंत्री ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को अपनी ऐच्छिक निधि से 51000 रुपये देने की घोषणा की।

आश्रम के बच्चों ने उनके द्वारा तैयार की गई मिठाइयां भी मुख्यमंत्री को भेंट की। जय राम ठाकुर ने कैंडी बनाने में बच्चों के प्रयासों की सराहना की।

बाल कल्याण परिषद् की महासचिव पायल वैद्य, उपायुक्त शिमला आदित्य नेगी, पुलिस अधीक्षक डॉ. मोनिका सहित अन्य लोग भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

विकासात्मक परियोजनाओं सम्बंधी लक्ष्यों को समयबद्ध प्राप्त किया जाए: मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। यह सुनिश्चित करने पर विशेष बल दिया जाना चाहिए कि विकास परियोजनाओं को समयबद्ध पूर्ण किया जाए और आमजन से सम्बंधित मुद्दों का प्राथमिकता के आधार पर निवारण किया जाए ताकि प्रदेश और प्रदेशवासी लाभान्वित हो सकें। यह बात मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने राज्य सरकार के प्रशासनिक सचिवों के साथ हुई बैठक की अध्यक्षता करते हुए कही।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विभिन्न श्रेणियों जैसे जेओए आईटी, जेबीटी, पीटीआई, एनटीटी आदि की भर्ती सम्बन्धी मुद्दों का समाधान करने पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि करूणामूलक आधार पर होने वाली भर्तियों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए क्योंकि इससे न केवल मृतक के परिजनों को लाभ होगा बल्कि जरूरतमंदों को रोजगार भी मिलेगा।

जय राम ठाकुर ने कहा कि एनजीटी में विचाराधीन होने के कारण लंबित सभी विकास परियोजनाओं के मुद्दों को सुलझाया जाए ताकि परियोजनाओं का कार्य शीघ्र आरम्भ किया जा सके। उन्होंने कहा कि विशेष रूप से विभिन्न विभागों से संबंधित परियोजनाओं में देरी ही नहीं हो रही बल्कि लोगों को इन परियोजनाओं का लाभ भी समय पर नहीं मिल रहा है। उन्होंने कहा कि इससे लागत भी बढ़ रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार विकास परियोजनाओं के क्रियान्वयन में किसी भी प्रकार की ढिलाई बर्दाश्त नही करेगी और दोषी अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने में भी संकोच नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि विभिन्न विकास परियोजनाओं से सम्बंधित लक्ष्यों को प्राप्त करने पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि नाबार्ड, पीएमजीएसवाई के सम्बंध में लोक निर्माण विभाग की परियोजनाओं का कार्य समयबद्ध पूर्ण किया जाना चाहिए। उन्होंने अधिकारियों को विभिन्न विभागों के बीच बेहतर समन्वय बनाने के लिए भी कहा ताकि परियोजनाओं की प्रगति में किसी प्रकार की बाधा न आए। उन्होंने अधिकारियों को राज्य में विभिन्न सड़कों का उचित रख-रखाव सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए।

जय राम ठाकुर ने कहा कि मुख्यमंत्री की घोषणाओं के प्रभावी क्रियान्वयन पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस सम्बंध में किसी भी तरह की ढिलाई को गंभीरता से लिया जाएगा। उन्होंने प्रशासनिक सचिवों को सम्बन्धित विभागों के लम्बित मुद्दों की पहचान करने के भी निर्देश दिए ताकि इनका शीघ्र निवारण किया जा सके।

मुख्य सचिव राम सुभग सिंह ने मुख्यमंत्री को आश्वासन दिया कि प्रशासनिक सचिव राज्य सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करेंगे।

अतिरिक्त मुख्य सचिव प्रबोध सक्सेना और जेसी शर्मा, प्रधान सचिव ओंकार शर्मा, रजनीश और सुभाशीष पांडा, सचिव देवेश कुमार, अक्षय सूद, अजय शर्मा, विकास लाबरू, सी पालरासू, राजीव शर्मा और एसएस गुलेरिया भी बैठक में उपस्थित थे।

82वें अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारी सम्मेलन की तैयारियों की समीक्षा बैठक

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने 16 से 19 नवम्बर, 2021 तक शिमला में आयोजित होने वाले 82वें अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन और विधानसभा

निकायों के सचिवों के 58वें सम्मेलन के लिए व्यवस्थाओं की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि आम जनता को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े, इसके लिए उचित यातायात योजना सुनिश्चित की जानी चाहिए।

जय राम ठाकुर ने कहा कि लोकसभा द्वारा इस अवसर पर प्रदर्शनी का आयोजन किया जाएगा, जिसमें विभिन्न विभागों को अपने उत्पादों का प्रदर्शन करना चाहिए। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि आयोजन के दौरान हिमाचली उत्पादों की भी प्रदर्शनी लगाई जाएगी।

सचिव सामान्य प्रशासन विभाग देवेश कुमार ने मुख्यमंत्री और अन्य गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। सचिव विधानसभा यशपाल शर्मा ने बैठक की कार्यवाही का संचालन किया।

अक्तूबर माह में 375.73 करोड़ रुपये रहा जीएसटी संग्रह

शिमला/शैल। राज्य आबकारी एवं कराधान विभाग ने जीएसटी के रूप में सितंबर, 2021 में 328.55 करोड़ रुपये एकत्र किए। वर्तमान वित्त वर्ष में अक्तूबर, 2021 तक संचयी जीएसटी संग्रह 2431.19 करोड़ रुपये रहा जो पिछले वर्ष के दौरान 1694.04 करोड़ रुपये था।

विभाग के एक प्रवक्ता ने बताया कि वर्तमान वर्ष में अब तक कुल जीएसटी राजस्व वृद्धि 44 प्रतिशत है। उन्होंने कहा कि राज्य जीएसटी राजस्व संग्रह में इस वित्त वर्ष कोविड-19 महामारी की दूसरी लहर के कारण लगे प्रतिबंधों के बावजूद लगातार सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई है।

उन्होंने कहा कि सकारात्मक विकास दर को बनाए रखने के लिए कुछ महत्वपूर्ण कारक शामिल हैं। इनमें शीर्ष करदाताओं की निगरानी, क्षेत्रीय अधिकारियों के प्रदर्शन की नियमित समीक्षा, विभाग द्वारा प्रभावी प्रवर्तन गतिविधियां और ई-वे बिलों का भौतिक सत्यापन आदि शामिल हैं। उन्होंने कहा कि विभिन्न क्षमता निर्माण उपायों के माध्यम से अपने तकनीकी कौशल को उन्नत करके क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं की संख्या में वृद्धि की गई है।

शिमला की जलापूर्ति सेवाओं में सुधार करेगी 1825 करोड़ रूपये की परियोजना:मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने बताया कि विश्व बैंक ने 1825 करोड़ रुपये के वित्तीय परिव्यय वाली शिमला जलापूर्ति एवं सीवरेज सर्विस डिलिवरी प्रोग्राम के नैगोसिएशन पैकेज को मंजूरी प्रदान की है। इस परियोजना के अन्तर्गत ग्रेटर शिमला क्षेत्र में जलापूर्ति सेवाओं में सुधार किया जाएगा। उन्होंने कहा कि कुल 1825 करोड़ रुपये में से विश्व बैंक 1168 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान करेगा जबकि शेष 657 करोड़ रुपये की राशि हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा वहन की जाएगी।

उन्होंने कहा कि यह परियोजना नगर निगम शिमला में चैबीसों घंटे जलापूर्ति सुनिश्चित करने के अलावा सीवरेज सेवाओं को मजबूत करेगी। इस परियोजना के अन्तर्गत वर्ष 2050 तक पानी की मांग को पूरा करने के लिए सतलुज नदी से अतिरिक्त 67 एमएलडी की जलापूर्ति की जाएगी। उन्होंने कहा कि शिमला के पेरी-अर्बन क्षेत्रों में भी पानी की आपूर्ति सुनिश्चित की जाएगी ताकि विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण के अंतर्गत आने वाले कुफरी, शोघी, घणाहट्टी और अतिरिक्त योजना क्षेत्रों की वर्ष 2050 तक जल सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।

जय राम ठाकुर ने कहा कि इस परियोजना के अन्तर्गत शिमला नगर निगम क्षेत्र के सभी घरेलू और वाणिज्यिक उपभोक्ताओं को चैबीसों घंटे पानी की आपूर्ति और बेहतर सीवरेज सेवाएं भी प्रदान की जाएंगी।

उन्होंने कहा कि इस परियोजना में शकरोड़ी गांव के पास सतलुज नदी से पानी उठाने की योजना है, जिसके अन्तर्गत पानी को 1.6 किमी ऊंचाई तक उठाकर और 22 किमी लम्बी पाइप लाइन बिछाकर संजौली में 67 एमएलडी पानी की वृद्धि की जाएगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस परियोजना में नगर निगम शिमला के अन्तर्गत सभी क्षेत्रों में वितरण पाइप के नेटवर्क को बदलने की भी योजना है ताकि इसे चैबिसों घण्टे जलापूर्ति प्रणाली में स्तरोन्नत किया जा सके। इसके अतिरिक्त, मैहली-पंथाघाटी, टूटू और मशोबरा क्षेत्रों में सीवरेज नेटवर्क प्रदान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह परियोजना वर्ष 2026 तक पूरी कर ली जाएगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने कोविड-19 के कारण उत्पन्न वित्तीय बाधाओं के बावजूद विश्व बैंक और वित्त मंत्रालय से इस वित्त पोषण को हासिल करने में सफलता प्राप्त की है। जय राम ठाकुर ने कहा कि इस सम्बन्ध में विश्व बैंक, भारत सरकार के आर्थिक मामलों के विभाग और हिमाचल प्रदेश के शहरी विकास विभाग के बीच जल्द ही समझौते पर हस्ताक्षर किए जाएंगे।

हिमाचल प्रदेश सरकार ने राज्य में पैट्रोल व डीजल पर वैट कम किय

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने तत्काल प्रभाव से पैट्रोल 5 रूपये प्रति लीटर और डीजल पर 10 रूपये प्रति लीटर उत्पाद शुल्क कम करने के लिए केन्द्र सरकार और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार के इस निर्णय से देश के लोगों को काफी राहत मिली है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने भी प्रदेश में पैट्रोल और डीजल पर वैट कम करने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि इससे राज्य में तत्काल प्रभाव से पैट्रोल 12 रूपये प्रति लीटर और डीजल 17 रूपये प्रति लीटर सस्ता होगा।

सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक श्री बलदेव शर्मा द्वारा ऋचा प्रिंटर्ज एण्ड पब्लिशर्ज़ रिवोली बस अड्डा लक्कड़ बाजार शिमला से प्रकाशित व मुद्रित दूरभाष: 0177-2805015, 94180-15015 फैक्स: 2805015

जन आक्रोश का परिणाम है कांग्रेस की यह जीत इसे बरकरार रखना होगा चुनौती

शिमला/शैल। प्रदेश कांग्रेस को 2014 के लोकसभा चुनाव के बाद 2019 के चुनावों तक जिस तरह की हार का सामना करना पड़ा है उस परिदृश्य में यह चारों उपचुनाव जीतकर उस हार की काफी हद तक भरपायी कर ली है । जीत की

कुलदीप राठौर विधायक या सांसद नहीं रहे हैं क्योंकि उनके विधानसभा क्षेत्र में उनसे हर तरह से वरिष्ठ नेता मौजूद थे और चुनाव टिकट उनको मिलते रहे। लेकिन एनएसयूआई और युवा कांग्रेस से लेकर आज मुख्य संगठन के अध्यक्ष पद तक जो उनका

थी आज उन्हीं मुद्दों पर पलटकर भाजपा और नरेंद्र मोदी को घेरना होगा और इसके लिए प्रमाणिक तथ्यों के साथ हमलावर होना होगा। आज भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा हिमाचल से ताल्लुक रखते हैं प्रदेश में दो बार मंत्री रहे चुके हैं। क्या उनको घेरने की

है और इस बार जिस तरह से उन्होंने ब्रिगेडियर खुशहाल सिंह और पूरी जयराम सरकार को मात दी है उससे जनता की उम्मीदें उनसे और बढ़ गई हैं। इस

संजय अवस्थी पूरी सरकार की ताकत को मात देकर आये हैं जहां वह प्रशंसा और बधाई के पात्र हैं वहीं पर उनकी यह जिम्मेदारी भी होगी कि वह प्रदेश

⇨ कुलदीप राठौर की अध्यक्षता में दूसरी बड़ी सफलता है यह जीत

⇨ इस जीत से बड़े नेताओं में नेतृत्व को लेकर टकराव की संभावना भी बढ़ी

समय जो तीन नवनिर्वाचित विधायक रोहित ठाकुर, भवानी पठानिया और

नेतृत्व से ऐसी परिस्थितियों में सवाल पूछने से भी गुरेज ना करें।

जो शुरुआत कांग्रेस ने दो नगर निगमें जीतकर की थी उसे टूटने नहीं दिया है यह प्रदेश नेतृत्व की एक बड़ी सफलता है। कांग्रेस इस जीत की कड़ी को कैसे आगे बढ़ाये रखती है यह नेतृत्व के लिए एक बड़ी चुनौती होगी और इसकी अगली परीक्षा नगर निगम शिमला के चुनाव होंगे। इस समय प्रदेश में कांग्रेस के अतिरिक्त भाजपा का और कोई कारगर विकल्प नहीं है इसलिए जनता की नाराजगी का स्वभाविक लाभ कांग्रेस को मिला है। कांग्रेस की इस जीत के लिए उसके अपने प्रयासों की बजाये जनता की नाराजगी का योगदान ज्यादा रहा है। क्योंकि जयराम सरकार के चार वर्ष के कार्यकाल में कांग्रेस का ऐसा कोई बड़ा काम नहीं रहा जिसने जनता का ध्यान अपनी ओर खींचा हो। बल्कि सच तो यह है कि इन चार वर्षों में कांग्रेस जयराम सरकार के खिलाफ कोई बड़ा आरोप पत्र तक नहीं ला पायी है। विधानसभा में उठे सवाल भी वॉक आउट से ज्यादा आगे नहीं बढ़ पाये हैं। यदि बंगाल की हार से नरेंद्र मोदी के ग्राफ पर प्रश्न चिन्ह न लगता तो शायद कांग्रेस में बिखराव देखने को मिल जाता और हिमाचल भी उससे अछूता न रहता क्योंकि जी तेईस के ग्रुप में हिमाचल से भी कुछ बड़े नेता सक्रिय थे। बड़े-बड़े नाम चर्चा में आने लग गये थे। कई नेता चुनाव लड़ने से घबराने लग गये थे। लेकिन आज बंगाल की हार और बढ़ती महंगाई ने सारा राजनीतिक परिदृश्य बदल कर रख दिया है। यह परिस्थिति बहुत संवेदनशील है और इसमें भाजपा केंद्र से लेकर राज्यों तक कांग्रेस को कमजोर करने के लिए साम-दाम और दंड भेद के सारे खेल खेलने का प्रयास करेगी। इस प्रयास में सबसे पहला निशाना प्रदेश अध्यक्ष का पद होगा।

राजनीतिक अनुभव है वह उनके किसी भी समकालिक से किसी भी तरह कम नहीं आंका जा सकता। बतौर प्रदेश अध्यक्ष हाईकमान उनकी राय को कम नहीं आंक सकता। क्योंकि इस समय उनकी अध्यक्षता में प्रदेश से लोकसभा में 8 वर्ष बाद कोई सदस्य जा रहा है। इन उप चुनावों से पहले दो नगर निगमों में भी उन्हीं की अध्यक्षता में सफलता मिली है। ऐसे में इस समय अध्यक्ष पद में बदलाव का कोई भी प्रयास कांग्रेस को कमजोर ही करेगा। इसलिए इस समय नेता प्रतिपक्ष मुकेश अग्निहोत्री पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सुखविंदर सिंह सुक्खू और सीडब्ल्यूसी की सदस्य आशा कुमारी तथा वर्तमान अध्यक्ष कुलदीप राठौर जितनी एकजुटता का व्यवहारिक परिचय देंगे संगठन को उससे उतना ही लाभ मिलेगा।

इन उपचुनावों के लिए जिस तरह के चारों उम्मीदवारों का चयन किया गया और उसमें अर्की के अतिरिक्त कहीं भी बड़ा विरोध देखने को नहीं मिला तथा उस विरोध के खिलाफ पहले ही दिन कारवाई करके जो संदेश जनता में गया उससे भी संगठन को लाभ मिला। अन्यथा जब मंडी में कुलदीप राठौर ने प्रतिभा सिंह की उम्मीदवारी के संकेत दिए थे तब उस पर पंडित सुखराम की यह प्रतिक्रिया जब आयी की उम्मीदवारी तय करने वाला राठौर कौन होता है यह फैसला तो हाईकमान करता है। उससे नकारात्मक संकेत उभरने शुरू हो गए थे जिन पर दोनों प्रभारियों ने कंट्रोल कर लिया। लेकिन क्या आगे भी इसी सबसे काम चल जायेगा यह सवाल अब बड़ा होकर उभरने लगा है। क्योंकि केंद्र ने एक ही हार के बाद भाजपा शासित राज्यों में वैट में कटौती कराकर कीमतें कम करने का पहला कदम उठा लिया है। आने वाले दिनों में ऐसे और भी कई कदम देखने को मिलेंगे। इसलिए जिन मुद्दों को उठाकर 2014 में भाजपा ने सत्ता छिनी

शुरुआत हिमाचल से नहीं होनी चाहिये? अनुराग ठाकुर को तो एक समय जयराम के मंत्री गोविन्द ठाकुर ने ही घेर दिया था। परंतु प्रदेश कांग्रेस इन बिन्दुओं पर आज तक खामोश है। पूर्व मुख्यमंत्री और प्रदेश भाजपा के वरिष्ठ सदस्य पूर्व केंद्रीय मंत्री शांता कुमार ने अपनी आत्मकथा में भ्रष्टाचार के मुद्दों पर जिस तरह से अपनी ही सरकार की कथनी और करनी को नंगा किया है उस पर भाजपा को राष्ट्रीय स्तर पर घेरा जा सकता है। लेकिन प्रदेश कांग्रेस के किसी भी नेता द्वारा इन मुद्दों को छुआ तक नहीं गया है। ऐसे अनेकों मामले हैं जिन पर भाजपा के पास कोई जवाब नहीं है। लेकिन प्रदेश कांग्रेस ऐसे मुद्दों को उठाने से जिस तरह से बचती आ रही है उससे प्रदेश कांग्रेस की नीयत और नीति दोनों पर शंकाएं भी उठना शुरू हो गयी हैं जो आगे चलकर नुकसान देह होगी।

क्योंकि आज वीरभद्र सिंह के निधन के बाद सही में कुछ नेताओं की महत्वकांक्षाएं जिस तरह से सामने आने लग गयी है उससे यही प्रमाणित हो रहा है कि निकट भविष्य में कांग्रेस के अंदर नेतृत्व का प्रश्न ही कहीं चुनाव से भी बड़ा ना हो जाये। क्योंकि कांगड़ा में स्व.जी.एस.बाली को श्रद्धांजलि देने के लिए रखी गयी सभा में कांगड़ा जिले के ही कई बड़े नेताओं का ना आना जनता की नजर से छुप नहीं पाया है। यही नहीं कुछ बड़े नेताओं का आनंद शर्मा के साथ ही इस सभा से चले जाना भी कई सवाल खड़े कर जाता है। यदि समय रहते इस सुलगने लगी चिंगारी को शांत नहीं किया गया तो यह कभी भी ज्वाला बन कर सबसे पहले अपने ही घर को जलाने से परहेज नहीं करेगी। इसमें प्रतिभा सिंह की जिम्मेदारी और भी बड़ी हो जाती है क्योंकि वह दो बार सांसद रह चुकी

क्या जयराम हटेंगे

...पृष्ठ 1 का शेष

कुमार धूमल एक दिन भी प्रचार पर नहीं निकले। शांता कुमार ने मंडी और अपने गृह जिला कांगड़ा की फतेहपुर सीट पर प्रचार किया। परिणाम दोनों जगह हार रहा। जनता ने शांता कुमार पर भी भरोसा नहीं किया। जनता ने शांता पर क्यों भरोसा नहीं किया और धूमल क्यों प्रचार पर नहीं निकले? इस पर जब नजर दौड़ायें तो सबसे पहले शांता की आत्मकथा सामने आती है। शांता ने भ्रष्टाचार को सरंक्षण देने के जो आरोप अपनी ही सरकार पर लगाये हैं क्या उनके बाद भी कोई आदमी भाजपा पर विश्वास कर पायेगा इन्हीं शांता कुमार ने इन उप चुनावों की पूर्व संध्या पर जब मानव भारती विश्वविद्यालय का फर्जी डिग्री कांड उठाया और आरोप लगाया कि डिग्रियां बिकती रही और सरकार सोयी रही। मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर और डीजीपी संजय कुंडू ने इस बारे में बात करके यहां तक कह दिया कि जिनको जेल में होना चाहिये वह खुले घूम रहे हैं। क्या यह इशारा धूमल की ओर नहीं था। इस मामले में जब शैल ने दस्तावेज जनता के सामने रखते हुए यह पूछा कि जयराम सरकार ने इस मामले में एफ आई आर दर्ज करने में 2 साल की देरी क्यों कर दी। इस सवाल से सारा परिदृश्य बदल गया और सभी शांत हो गये। ऐसे में यदि धूमल प्रचार पर निकलते तो क्या इस हार को उनके सिर लगाया जाता?

इसी तरह इस उपचुनाव में उछले परिवारवाद के मुद्दे पर भी भाजपा अपने ही जाल में उलझ गयी। मण्डी और जुब्बल कोटखाई में परिवारवाद की परिभाषा बदल गयी। यही नहीं चुनाव

प्रचार के दौरान जिस तरह का ब्यान सुरेश भारद्वाज और प्रदेश प्रभारी अविनाश खन्ना का सामने आया उसे सीधे इन नेताओं की नीयत ही सवालों में आ गयी। इन उपचुनावों में वह मामले तो उछले ही नहीं जो इनके ही लोगों द्वारा करवाई गई एफ.आई.आर. से उठे हैं। यदि कल को उन मामलों को लेकर कोई उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटा देता है तो उसके परिणाम कितने भयानक होंगे उसका अंदाजा लगाना आसान नहीं होगा। क्योंकि उससे 68-शून्य होना कोई हैरानी नहीं होगी। आज उपचुनावों में मिली हार आने वाले समय में पार्टी को राष्ट्रीय स्तर पर भी घातक प्रमाणित होगी यह तह है। इस परिदृश्य में यह सवाल महत्वपूर्ण हो गया है कि प्रदेश में नेतृत्व परिवर्तन होता है या नहीं। कांग्रेस के लिए जयराम सबसे आसान टारगेट होंगे। क्योंकि जिस तरह के सलाहकारों और चाटुकारों से मुख्यमंत्री घिर गये है उनसे बाहर निकलना शायद अब संभव नहीं रह गया है। जितने मुद्दे जयराम ने अपने लिये खड़े कर लिये हैं वह स्वाभाविक रूप से आने वाले दिनों में एक-एक करके जनता के सामने आयेंगे। अब शायद अधिकारी भी मुख्यमंत्री या उनकी मित्र मंडली के आगे मूकबधिर बनकर डांस करने से परहेज करेंगे। क्योंकि यदि मुख्यमंत्री परिणामों के तुरंत बाद हार की नैतिक जिम्मेदारी लेकर पद त्यागने की पेशकश कर देते तो शायद उनके राजनीतिक कद में सुधार हो जाता। लेकिन सलाहकारों ने महंगाई पर ब्यान दिलाकर स्थिति को और बिगाड़ दिया है।